# महाराणा प्रताप महाविद्यालय

## जंगल धूसड़, गोरखपुर

**शैक्षिक-पाञ्चांग**

| | | |
|---|---|---|
| प्रवेश आवेदन-पत्र प्राप्त होने की तिथि | : | १५ से ३० जून तक |
| प्रवेश अर्हता सूची का प्रकाशन | : | १५ जुलाई |
| प्रवेश | : | १६ से ३० जुलाई |
| कक्षारम्भ | : | १ अगस्त से |
| छात्र परिषद का गठन | : | ३० अगस्त तक |
| छात्र परिषद का शपथ ग्रहण | : | ५ सितम्बर |
| दिग्विजयनाथ पुण्य तिथि समारोह | : | १३ से २० सितम्बर |
| महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् स्थापना समारोह | : | ४ से १० दिसम्बर |
| पाठ्यक्रम पूर्ण | : | मकर संक्रान्ति तक |
| वार्षिक परीक्षा | : | १ से २० फरवरी |

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॐ जो हठि राखै धर्म को तिहिं राखै करतार

# महाराणा प्रताप महाविद्यालय

## जंगल धूसड़, गोरखपुर

**आमन्त्रण-पत्र**

## राष्ट्रीय संगोष्ठी

( 7 से 9 जनवरी, 2006 )

# ग्रामीण भारत का भविष्य

प्रेषक -

डा० प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य

डा० विजय कुमार चौधरी
संयोजक

सेवा में,
श्रीयुत्/श्रीमती _____
_____
_____

महाराणा प्रताप महाविद्यालय गोरखपुर-पिपराइच मार्ग पर गीता वाटिका से मात्र ढाई किलोमीटर दूरी पर स्थित है।

Scanned with OKEN Scanner

# कार्यक्रम विवरण

## उद्घाटन-समारोह

तिथि - ०७ जनवरी २००६, दिन- शनिवार

समय-१०.३० बजे

### अतिथि

- सानिध्य : परम पू० महंत अवेद्यनाथ जी महाराज
  गोरक्षपीठाधीश्वर
- मुख्य अतिथि : मा० के. एन. गोविन्दाचार्य
  प्रसिद्ध विचारक, चिन्तक एवं समाजसेवी
- अध्यक्षता : प्रो० अरूण कुमार
  कुलपति, दी०द०उ०गो०विश्वविद्यालय, गोरखपुर
- विशिष्ट अतिथि : प्रो० आर. पी. मिश्र
  पूर्व कुलपति, इलाहाबाद वि०वि०
  जाकिर हुसैन चेयर, मैसूर वि०वि

## समापन-समारोह

तिथि - ०९ जनवरी २००६, दिन- सोमवार

समय- २.०० बजे

मुख्य अतिथि- मा० राहुल देव

वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली

### स्वागताकांक्षी

| | | |
|---|---|---|
| राधेश्याम पालडीवाल | श्याम बिहारी अग्रवाल | संजय राय |
| अध्यक्ष स्वागत समिति | महामंत्री स्वागत समिति | संयोजक स्वागत समिति |

# उद्घाटन-समारोह

## आमंत्रण

महोदय/महोदया,

ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अन्तर्गत पूज्य गुरूदेव महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के आशीर्वाद से महानगर के उत्तरी छोर जंगल धूसड़ में महाराणा प्रताप महाविद्यालय की नीव रखी गयी। अपने पहले सत्र में ही महाविद्यालय ने शैक्षणिक गुणवत्ता एवं अनुशासन के साथ शैक्षिक परिसर संस्कृति को पुनर्स्थापित कर उच्च शिक्षा क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के विकास को केन्द्र में रखकर "ग्रामीण भारत का भविष्य" विषय पर महाविद्यालय ने राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित किया है। इस संगोष्ठी में कुल 12 प्रान्तों से लगभग सवा सौ शिक्षाविदों एवं विषय विशेषज्ञों के साथ कुल तीन सौ प्रतिनिधि सम्मिलित हो रहे है। इस क्षेत्र के विकास के पहल की कड़ी में यह संगोष्ठी आधार स्तम्भ बनें, यह हमारा प्रयास है। **संगोष्ठी के उद्घाटन एवं समापन समारोह में आप सादर आमंत्रित हैं।**

उत्तरापेक्षी :

**महाराणा प्रताप महाविद्यालय**

पिपराइच रोड, जं० धूसड़

गोरखपुर

निवेदक :

**योगी आदित्यनाथ**

प्रबन्धक/मंत्री

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

संसद सदस्य ( लोक सभा ) गोरखपुर

Scanned with OKEN Scanner

# आमंत्रण-पत्र

## राष्ट्रीय संगोष्ठी

सूचना-पत्र (तृतीय)

## ग्रामीण भारत का भविष्य

**जनवरी 7-9, 2006**

भूगोल विभाग

**महाराणा प्रताप महाविद्यालय**

जंगल धूसड़- गोरखपुर

Scanned with OKEN Scanner

# संगोष्ठी कार्यक्रम

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जनवरी 07, 2006 | प्रातः | 10.00–12.30 | उद्घाटन सत्र | विषय स्थापना वक्तव्य |
| | अपरान्ह | 01.30–03.00 | प्रथम सत्र | जातीय एवं प्रजातीय भारत का प्रतिरूप |
| | | 03.15–04.00 | द्वितीय सत्र | शिल्प विज्ञानी भारत का प्रतिरूप |
| | | 04.15–05.15 | तृतीय सत्र | शिल्प विज्ञानी भारत का प्रतिरूप |
| | | 05.25–06.00 | विशेष व्याख्यान | प्रो. आर. पी. मिश्र |
| | | 06.15–08.30 | सामूहिक चर्चा | ज्योग्राफी बनाम भूगोल |
| जनवरी 08, 2006 | प्रातः | 09.30–11.00 | चतुर्थ सत्र | अनुप्राणित भारत प्रक्रिया एवं प्रतिरूप |
| | प्रातः | 11.30–01.00 | पंचम सत्र | अनुप्राणित भारत प्रक्रिया एवं प्रतिरूप |
| | अपरान्ह | 01.45–02.45 | षष्ठ सत्र | जैव–विविधता एवं ग्रामीण भारत |
| | अपरान्ह | 03.30–06.00 | विशेष व्याख्यान | प्रो. डी. के. सिंह एवं प्रो. एन. के. डे |
| | सायं | 06.15–07.30 | दृश्य श्रव्य वार्ता | एवं सांस्कृतिक संध्या |
| जनवरी 09, 2006 | प्रातः | 09.00–10.30 | सप्तम सत्र | धर्मसार भारत का प्रादेशिक प्रतिरूप |
| | प्रातः | 10.30–12.00 | विशेष व्याख्यान | प्रो. जगदीश सिंह, प्रो. वी. के. श्रीवास्तव |
| | अपरान्ह | 1.00–4.00 | समापन सत्र | विशेष उद्बोधन – प्रो. महेश नारायण निगम, प्रो. संतोष कुमार शुक्ल, प्रो. नूर मुहम्मद |


डॉ. प्रदीप राव
प्राचार्य

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
☎:0551-2508309, 9415322415


## आमन्त्रण

महोदय / महोदया

सादर अभिवादन !

ब्रह्मलीन महन्थ दिग्विजयनाथ जी महराज द्वारा स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अन्तर्गत संचालित महाराणा प्रताप महाविद्यालय की नींव गोरक्षपीठाधीश्वर परम पूज्य महन्थ अवेद्यनाथ जी महाराज ने 29 जुलाई 2004 को रखी। गोरखपुर के सांसद एवं गोरक्षपीठ उत्तराधिकारी पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज की देख रेख में इस महाविद्यालय का भव्य भवन एवं परिसर एक वर्ष के अल्पकाल में तैयार हो गया। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एवं भौतिक वैज्ञानिक पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री प्रो0 मुरली मनोहर जोशी के कर कमलों द्वारा 29 जून 2005 को महाविद्यालय का उद्घाटन हुआ तथा महाविद्यालय का प्रथम सत्र प्रारम्भ हो गया। पूज्य महाराज जी इच्छा है कि यह महाविद्यालय भारतीय संस्कृति से युक्त राष्ट्रीय विचार धारा का अकादमिक केन्द्र बने तथा उच्च शिक्षा संस्थान का प्रतिमान स्थापित करे।

गोरखपुर महानगर के उत्तरी छोर पर सुरम्य वातावरण में स्थित महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियाँ, परिसर का वातावरण, मानक उच्च शिक्षण संस्थान के प्रयोगशाला के रूप में इस संस्थान के निरन्तर विकास का प्रयास जारी है। विविध शैक्षणिक गतिविधियों की शृंखला में प्रतिवर्ष एक राष्ट्रीय संगोष्ठी कराने की महाविद्यालय परिवार की योजना के क्रम में प्रथम सत्र की पहली राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। आप इस संगोष्ठी में सादर आमंत्रित हैं। आप की उपस्थिति से हम सभी उत्साहित होंगे तथा हमारे बढ़ते कदमों को दृढ़ आधार मिलेगा।

Scanned with OKEN Scanner

# ग्रामीण भारत का भविष्य

## भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में

वर्तमान संदर्भ में ग्रामीण भारत का भविष्य एक ज्वलंत प्रश्न चिन्ह है। विश्व में महाद्वीपीय विस्तार की अर्थव्यवस्था ने प्रायः सभी देशों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। विश्व व्यापार संगठन द्वारा अर्थव्यवस्था का भूमण्डलीकरण विश्व के ग्रामीण क्षेत्रों की सांस्कृतिक धरोहर, सामाजिक संगठन, जैव विविधता एवं पारिस्थितिकी को विशेष रूप से रूपाँतरित कर रहा है। इस संदर्भ में ग्रामीण भारत का स्वरूप क्या होने जा रहा है, इस पर विचार–विमर्श आवश्यक है।

विश्व में समान तकनीकी, समान प्रौद्योगिकी और समान अर्थव्यवस्था वाले देशों के बीच भूमण्डलीय स्तर पर समूहन दृष्टव्य है। विलीनीकरण और विनिवेश की पद्धतियाँ विकासशील एवं अविकसित देशों की सम्प्रभुता को कमजोर कर रही हैं। एक ओर भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृति, धार्मिक आस्था, प्रजातांत्रिक व्यवस्था, जनसंख्या वृद्धि एवं संरचना का प्रारूप है तो दूसरी ओर देशज जीवन पद्धति को आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, प्रौद्योगिकी, सूचना विस्फोट आदि से मिल रही चुनौतियां हैं। ऐसी स्थिति में ग्रामीण भारत के अपने व्यक्तित्व की पहचान पर प्रश्नचिह्न लगता दिख रहा है। सामाजिक परिवर्तनशीलता एक सर्वमान्य सत्य है। ग्रामीण भारत का समाज भी पूर्व वर्णित प्रक्रियाओं, पद्धतियों, नीतियों और अपनी स्वयं की गतिशीलता के कारण तेजी से परिवर्तित हो रहा है। ऐसी स्थिति में विचारणीय है कि –

1. क्या भारतीय समाज भूमण्डलीकृत सभ्यता के दबाव में आ रहा है?
2. क्या जनसंख्या का बढ़ता दबाव ग्रामीण संसाधनों की उपलब्धि एवं पर्यावरण की गुणवत्ता को संक्रमित कर रहा है?
3. क्या ग्रामीण भारत की कृषि अर्थव्यवस्था का देशज स्वरूप खतरे में है?
4. क्या आधुनिकीकरण की आड़ में ग्रामीण भारत की संस्कृति का क्षरण हो रहा है?
5. किस सीमा तक ग्रामीण भारत तकनीकी, सूचना प्रौद्योगिकी, वैकल्पिक उर्जा एवं पर्यावरण संवर्धन के प्रयासों को आत्मसात कर सकता है।
6. वर्तमान शिक्षा प्रणाली भारत के ग्रामीण संस्कृति को बचाने एवं उसके परिवर्द्धन में कहा तक सहायक है।



### उद्देश्य

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ग्रामीण भारत की सक्रिय सहभागिता पर विचार–विमर्श करने के लिए एक मंच प्रदान करना है। ग्रामीण भारत का भौगोलिक स्वरूप अनूठा है। संसार की प्राचीनतम् सभ्यता और संस्कृति के उद्भव एवं विकास का केन्द्र बिन्दु भारतीय उपमहाद्वीप (प्राचीन भारत) है। अभी भी भारतीय उपमहाद्वीप की ग्रामीण जनसंख्या कुल जनसंख्या के 80 प्रतिशत से अधिक है। भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था उपमहाद्वीप के औद्योगिक विकास एवं बदलते राजनीतिक गठबन्धन को संगठित रखने में सक्षम है। इसका आधार विपुल कृषि उत्पादन, जैव विविधता, खनिज एवं वन्य संसाधनों की सम्पन्नता, मध्यम औद्योगिक विकास, जीवन की गुणवत्ता एवं ऐसी सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं हैं जिन्होंनें उप महाद्वीप के स्थायित्त्व को बनाये रखने में सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया है।

अतः ग्रामीण भारत से सम्बन्धित कतिपय ज्वलंत प्रश्नों पर विचार–विमर्श हेतु भौगोलिक दृष्टिकोण अपनाना उपयोगी होगा।

### मुख्य विचारणीय विषय

ग्रामीण भारत एक ऐसा व्यापक एवं विषम संदर्भ है, जिसमें अनेकानेक विषयों पर विचार–विमर्श किया जा सकता है। वर्तमान वैश्विक संदर्भ में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संक्षिप्त, सफल एवं फलदायी बनाने के लिए निम्नलिखित चिन्तन फलक प्रस्तावित हैं–

1. **जातीय एवं प्रजातीय भारत का प्रतिरूप**

**Patterns of castes & Tribes in India**

- ग्रामीण जनसंख्या की गत्यात्मकता

  Dynamics of Rural Population
- शिशु स्वास्थ्य, लिंग भेद एवं महिला सशक्तीकरण

  Child Health, Sex and Women Empowerment
- जातीय भारत एक राजनीतिक परिदृश्य

  A Political Profile of Castes in India
- जातीय भारत के मानवीय आयाम एवं मानवाधिकार

  Human dimensions, human rights and caste factor in India
- जातीय गत्यात्मकता

  Caste dynamics



Scanned with OKEN Scanner

- अरण्य संस्कृति का बदलता प्रतिरूप
  Changing Pattern of Forest culture in India
- द्वीपीय अरण्य संस्कृति
  Island Tribal culture in India

2. शिल्प विज्ञानी भारत का प्रतिरूप
   Pattern of Technology in India
- जैव प्रौद्योगिकी एवं कृषि
  Bio – Technology and Agriculture
- जैव प्रौद्योगिकी एवं मानव समाज
  Bio – Technology and human society
- ग्रामीण भारत में शाश्वत उर्जा के प्रतिरूप एवं सम्भावनाएं
  Pattern and Possibility of dustainable energy in rural India
- प्रौद्योगिकी एवं आपदा प्रबंधन प्रतिरूप
  Technology and disaster Management Pattern
- ग्राम – नगर सातत्व
  Urban – Rural continuum

3. अनुप्राणित भारत-प्रक्रिया एवं प्रतिरूप
   Processes & Patterns of Information Revolution
- सूचना विस्फोट एवं ग्रामीण जीवन पद्धति के बदलते प्रतिरूप
  Information Revolution and changing patterns of rural life style
- पंचायती राज्य व्यवस्था में जन–भागीदारी
  Panchayati Raj System and Public Participation
- जैव राजनीति एवं ग्रामीण भारत
  Bio Politics and Rural India

4. जैव-विविधता एवं ग्रामीण भारत
   Bio - Diversity and Rural India
- औषधीय वनस्पति प्रतिरूप एवं सम्भाव्यता
  Patterns & Possibilities of Medicinal Plants



- कृषि पद्धतियां एवं जैव–विविधता
  Agri-Systems and Bio-Diversity
- पशुचारण पद्धतियां एवं पारिस्थितिकी
  Pastoral Systems & Ecology
- राष्ट्रीय वन्य उद्यान / अभ्यारण्य / शरण्य वितरण प्रतिरूप एवं जैव संरक्षण
  National Parks/Sanctuaries/Biosphere Reserves -
- जैव–विविधता एवं जीवन की गुणवत्ता
  Bio-Diversity and Quality of life

5. धर्मसार भारत का प्रादेशिक प्रतिरूप
   Regional Pattern of Religions in India
- धर्म – सामाजिक समन्वयन एवं समरसता
  Religion - Social integration and harmony
- धर्म एवं ग्रामीण भारत
  Religion and Rural India
- धर्मांतरण एवं धार्मिक जनसंख्या की संरचना में परिवर्तन
  Structure of religion based population
- प्राचीन / मध्यकालीन भारत में दुर्ग पारिस्थितिकी एवं सामाजिक संगठन
  Ecology of Medieval and ancient forts and social organisation
- अपराधों का भूगोल और ग्रामीण भारत
  Geography of crimes & Rural India

**शोध प्रपत्र**

सारांश में विषय वस्तु का उद्देश्य, प्रयुक्त विधितन्त्र एवं निष्कर्ष का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। संगोष्ठी के सूचना प्रपत्र में निर्दिष्ट विषयों पर ही शोध–प्रथम स्वीकृत किये जायेगें। प्राथमिक आकड़ों पर आधारित ग्रामीण क्षेत्रों के आनुभाविक अध्ययन से सम्बन्धित प्रपत्रों को वरीयता दी जायेगी। संकल्पनात्मक, सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक शोध–प्रपत्र अपेक्षित है। प्रतिभागियों के आमन्त्रण की पुष्टि पूर्ण शोध–प्रपत्र के संगोष्ठी के अनुरूप होने पर की जायेगी। पूर्ण शोध–प्रपत्र अधिकतम 2500 शब्दों का ए–4 आकार के कागज पर कम्प्यूटर कम्पोजिंग + सी. डी. द्वारा भेजें।



Scanned with OKEN Scanner

## संगोष्ठी कार्यवाही पुस्तिका

शोध–प्रपत्रों की प्रस्तुति समय को संक्षिप्त करने तथा विवेचना की सुविधा के लिए सभी शोध–प्रपत्र संगोष्ठी की कार्यवाही पुस्तिका के रूप में प्रतिभागियों को वितरित की जायेगी। संगोष्ठी के उपरान्त चुने गये विशिष्ट शोध–प्रपत्रों का प्रकाशन पुस्तक के रूप में किया जायेगा।

इस संगोष्ठी में मूलतः भौगोलिक आयामों से सबंधित प्रपत्र अपेक्षित हैं किन्तु सह–विज्ञानी विषयों यथा वनस्पतिशास्त्र/जीव विज्ञान/नृतत्वशास्त्र/ इतिहास/राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र/ समाजशास्त्र/शिक्षाशास्त्र/प्रबंधन विज्ञान/जैव प्रौद्योगिकी/औषध शास्त्र के आलोक में रचित प्रपत्र भी आमंत्रित हैं।

## भाषा

शोध प्रपत्र अंग्रेजी/हिन्दी भाषा में स्वीकृत होगें।

## पंजीयन

पंजीयन शुल्क रू0 300.00 है। किन्तु महाविद्यालय के संस्थापक एवं अध्यक्ष गोरक्षपीठाधीश्वर, परम पूज्य महंत अवेद्यनाथ जी महाराज अपनी तरफ से प्रत्येक प्रतिभागी का रू0 150.00 पंजीयन शुल्क महाविद्यालय के स्थापना वर्ष होने के कारण प्रदान करेंगे। अतः प्रतिभागी द्वारा मात्र रू0 150.00 का बैंक ड्राफ्ट 'महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर' के नाम से गोरखपुर मे देय अनुमन्य होगा। शोध प्रपत्र अस्वीकृत होने की दशा मे पंजीयन शुल्क वापस कर दिया जायेगा।

## आवास/भोजन व्यवस्था

आवास एवं भोजन व्यवस्था महाविद्यालय की ओर से निःशुल्क रहेगी।

## गोरखपुर

गोरखपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित गुरू गोरखनाथ की तपोभूमि है। यह नगर उत्तर–पूर्व रेलवे का मुख्यालय होने के कारण देश के सभी शिक्षा केन्द्रों/महानगरों से रेलमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। जनवरी माह में बहुत अधिक ठंड रहती है। इसलिए प्रतिभागी गण अपने साथ ठंड से बचाव हेतु ऊनी वस्त्र अवश्य लावें।

गोरखपुर के दर्शनीय स्थलों में गोरक्षनाथ मंदिर, गीता प्रेस एवं गीता वाटिका महानगर में स्थित हैं। गोरखपुर महानगर से भगवान बुद्ध की निर्वाण स्थली कुशीनगर 50 किमी. की दूरी पर है। संत कबीर की समाधि स्थली मगहर 20 किमी. की दूरी पर स्थित है तथा यहां से नेपाल सीमा की दूरी लगभग 100 किमी. है। नेपाल के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए सड़क मार्ग से सुगमता पूर्वक जाया जा सकता है।

# प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी

**जनवरी 7–9, 2006**

**गोरखपुर**

## पंजीयन पत्र

1. नाम (क) हिन्दी.....
   (ख) अंग्रेजी (English) .....
2. संस्था.....
3. व्यवसाय.....
4. पत्र व्यवहार पता.....
   .....
   दूरभाष/मोबाइल ..... फैक्स .....
   ई–मेल .....
5. शोध–प्रपत्र–शीर्षक .....
   .....
6. निर्दिष्ट विषय से सम्बन्धित .....
   .....
7. आगमन– दिनांक ..... प्रस्थान– दिनांक.....
8. ट्रेन नाम एवं नम्बर .....
9. पजीयन शुल्क रू0 150/– बैंक ड्राफ्ट सं.....
   बैंक.....दिनांक.....

दिनाँक .....

स्थान .....

**भेजें –**
**डॉ० विजय कुमार चौधरी**
संयोजक
प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी
भूगोल विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर-२७३०१४

*हस्ताक्षर*

**पंजीयन-पत्र की फोटो कापी स्वीकार है**

Scanned with OKEN Scanner

# परामर्श दात्री समिति

| | |
|---|---|
| प्रो. आर. पी. मिश्र | जाकिर हुसैन चेयर, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर<br>पूर्व कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय |
| प्रो. महेश नरायण निगम | पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग, निदेशक जनसंख्या एवं<br>पर्यावरण संस्थान अजमेर, राजस्थान |
| प्रो. डी. के. सिंह | पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग<br>भुवनेश्वर विश्वविद्यालय, उड़ीसा |
| प्रो. एन. के. डे. | पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग<br>वर्द्धमान विश्वविद्यालय, पं0 बंगाल |
| प्रो. आर. एस. दुबे | पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग,<br>हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर |
| प्रो. नूर मुहम्मद | पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग,<br>दिल्ली, विश्वविद्यालय, दिल्ली |
| प्रो. एच. एन. मिश्र | अध्यक्ष, भूगोल विभाग,<br>इलाहाबाद, विश्वविद्यालय, इलाहाबाद |
| प्रो. शिवाजी सिंह | पू. अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग<br>दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर |
| प्रो. जगदीश सिंह | पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग,<br>दी.द.उ.,गोरखपुर, विश्वविद्यालय,गोरखपुर |
| प्रो. वी. के. श्रीवास्तव | पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग,<br>दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर |
| प्रो. ए. के. मित्तल | अध्यक्ष, इतिहास विभाग<br>दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर |
| प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त | हिन्दी विभाग<br>दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर |

# स्वागत समिति

## मुख्य संरक्षक

प. पूज्य अवेद्यनाथ जी महाराज
गोरक्षपीठाधीश्वर गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर

## संरक्षक

प. पूज्य आदित्यनाथ जी महाराज
सांसद, उत्तराधिकारी गोरक्षपीठ, गोरखपुर

## संरक्षक मण्डल

**श्री अवधेश श्रीवास्तव,** पूर्व सदस्य विधान सभा
**डॉ० वाई० डी० सिंह,** सदस्य विधान परिषद
**डॉ० राधा मोहन दास अग्रवाल,** सदस्य विधान सभा
**श्री दया शंकर दुबे,** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विश्व हिन्दु महासंघ
**श्री राकेश सिंह पहलवान,** राष्ट्रीय संगठन मंत्री विश्व हिन्दु महासंघ
**श्री बाल कृष्ण सर्राफ,** विभाग अध्यक्ष विश्व हिन्दु परिषद
**श्री ओ. पी. डिडवानिया,** महानगर संघचालक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
**श्री परमेश्वर जी,** राम प्रसाद आप्टीशियन
**श्री ज्योति मसखरा,** उद्योगपति
**श्री चन्द्र प्रकाश तुलस्यान,** उद्योगपति
**श्री ओम जालान,** उद्योगपति
**श्री अशोक जालान,** उद्योगपति
**श्री हरि मोहन दास अग्रवाल,** उद्योगपति
**श्री सुरेन्द्र अग्रवाल,** महामंत्री चेम्बर आफ इण्डस्ट्रीज, गोरखपुर
**डॉ० उमा सराफ,** निदेशक स्कालर्स शिक्षण संस्थान
**डॉ० विजय जालान,** चिन्तक एवं समाज सेवी

| अध्यक्ष | महामंत्री | संयोजक |
|---|---|---|
| श्री राधेश्याम पालड़ीवाल | श्री श्याम बिहारी अग्रवाल | श्री संजय राय |



Scanned with OKEN Scanner

# संचालन समिति

## मुख्य संरक्षक

**प्रो० अरुण कुमार**

कुलपति, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

## संरक्षक

**डॉ० भोलेन्द्र सिंह**
पूर्व कुलपति
बीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय

**प्रो० यू.पी. सिंह**
पूर्व कुलपति,
बीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय
जौनपुर

**प्रो० राधे मोहन मिश्र**
पूर्व कुलपति
दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

**प्रो० राम अचल सिंह**
पूर्व अध्यक्ष, उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, उ0प्र0
पूर्व कुलपति
डॉ0राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

## अध्यक्ष

**प्रो० शिव शंकर वर्मा**
अध्यक्ष
भूगोल विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

## उपाध्यक्ष

**प्रो० एस.के. दीक्षित**
भूगोल विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

**प्रो० पी.आर. चौहान**
भूगोल विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

**डॉ० के.एन. सिंह**
भूगोल विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

**डॉ० यू.पी. सिंह**
भूगोल विभाग, दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महा0, गोरखपुर

**डॉ० सिराज अहमद वर्जाह**
वनस्पति विज्ञान, एम.जी.पी.जी. कालेज, गोरखपुर

**डॉ रण विजय सिंह**
न्यायाधिकारण, एन.ई.आर. गोरखपुर

**डॉ० शीला सिंह**
मनोविज्ञान, दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महा0, गोरखपुर



## महासचिव

**डॉ० एस.के. सिंह**
भूगोल विभाग, दी.द.उ., गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

## सचिव

**डॉ० राम बरन पटेल,** भूगोल विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
**डॉ० रामदेव त्रिपाठी,** भूगोल विभाग, शिवहर्ष किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बस्ती
**डॉ० वंशराज सिंह,** भूगोल विभाग, भटौली महाविद्यालय, भटौली, गोरखपुर
**० महात्म प्रसाद,** भूगोल विभाग, बापू महाविद्यालय, पीपीगंज, गोरखपुर
**डॉ० जे.पी. राय,** भूगोल विभाग, डी.सी.एस.के.पी.जी. कालेज, मऊ
**डॉ० चन्द्र शेखर सिंह,** प्राचार्य, किसान महाविद्यालय, हाटा, कुशीनगर

## सदस्य

**डॉ० श्रीपाल सिंह,** भूगोल विभाग, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर
**श्री भगवान देव मौर्य,** भूगोल विभाग दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर
**डॉ० अखिलेश सिंह,** भूगोल विभाग, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर
**डॉ० शशि भूषण त्रिपाठी,** भूगोल विभागबुद्ध विद्यापीठ कालेज, नौगढ़, सिद्धार्थनगर
**डॉ० विद्यावती सिंह,** भूगोल विभाग संत बिनोवा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देवरिया
**डॉ० रामाश्रय सिंह,** भूगोल विभाग, ही.रा. पी0जी0 कालेज, खलीलाबाद, संतकबीर नगर
**डॉ० अनुराग द्विवेदी,** समाजशास्त्र विभाग दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
**डॉ० सी०बी० सिंह,** भूगोल विभाग उदित नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पडरौना
**डॉ० मुकुन्द शरण त्रिपाठी,** इतिहास विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
**डॉ० त्रियुगीनाथ चौधरी,** भूगोल विभाग, जवाहर लाल नेहरू स्ना. महाविद्यालय महाराजगंज
**डॉ० हरिराम यादव,** भूगोल विभाग, मदन मोहन मालवीय स्ना. महा. भाटपाररानी, देवरिया
**डॉ० परमहंस पाठक,** जन्तुविज्ञान विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
**डॉ० बी.एन. पाण्डेय,** वनस्पतिविज्ञान विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
**डॉ० अरविन्द सिंह,** भूगोल विभाग, शिवपति डिग्री कालेज, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर

## सम्मानित विशिष्ट सदस्य

**प्रो. बी.पी. राव, प्रो. हीरा लाल यादव, प्रो. जगत नारायण पाण्डेय**



Scanned with OKEN Scanner

# आयोजन समिति

## मुख्य संरक्षक

प. पूज्य अवेद्यनाथ जी महाराज, गोरक्षपीठाधीश्वर गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर

## अध्यक्ष

डॉ0 कुँवर नरेन्द्र प्रताप सिंह, प्राचार्य दिग्विजयनाथ स्ना. महाविद्यालय, गोरखपुर

## उपाध्यक्ष

डॉ0 अंजली मिश्रा, वरिष्ठ प्रवक्ता, जन्तु विज्ञान, पी.जी. कालेज, गाजीपुर,

डॉ0 ओ.पी. राय, प्रधानाचार्य, राजकीय जुबली इण्टर कालेज, गोरखपुर

श्री बलवीर सिंह, प्रधानाचार्य, नीना थापा इण्टर कालेज, गोरखपुर

श्री राम जनम सिंह, प्रधानाचार्य, महाराणा प्रताप इण्टर कालेज, गोरखपुर

श्री राम मोहन शाही, मण्डल मन्त्री मा.शि. संघ, गोरखपुर

## सचिव

डॉ0 धनन्जय सिंह, वरिष्ठ प्रवक्ता, भटवली महाविद्यालय, गोरखपुर

## संयुक्त सचिव

डॉ0 राजेश दूबे, प्रवक्ता, ही.रा. स्ना. महाविद्यालय, संतकबीर नगर

डॉ0 शशिकान्त मणि तिवारी, प्रवक्ता, च. र. आर्य महिला महा., गोरखपुर

डॉ0 यशपाल सिंह, प्रवक्ता, स्कालर्स महिला महाविद्यालय खोराबार, गोरखपुर

## सदस्य

डॉ0 अर्चना तिवारी, विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान, गंगोत्री देवी महाविद्यालय, गोरखपुर : डॉ0 राजशरण शाही, प्रवक्ता, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर : डॉ0 सतीश द्विवेदी, प्रवक्ता, बुद्ध पी.जी. कालेज, कुशीनगर, डॉ0 दिनेश्वर शाही, प्रवक्ता, जन्तु विज्ञान, ही.रा. स्ना. महा सन्त कबीर नगर, डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह, प्रवक्ता, राजनीतिशास्त्र, गो.वि.वि. गोरखपुर, डॉ0 रजनीश मिश्र, प्रवक्ता, अर्थशास्त्र, गो.वि.वि. गोरखपुर, डॉ0 नितिन बख्शी, प्रवक्ता, वाणिज्य, इस्लामिया कालेज ऑफ कॉमर्स, गोरखपुर, डॉ0 आनन्द द्विवेदी, प्रवक्ता, वाणिज्य, इस्लामिया कालेज ऑफ कॉमर्स, गोरखपुर, डॉ0 सीता पाण्डेय, प्रवक्ता, चन्द्रकान्ति रमावती आर्य महिला महाविद्यालय, गोरखपुर, डॉ0 अर्चना शुक्ला, प्रवक्ता, चन्द्रकान्ति रमावती आर्य महिला महाविद्यालय, डॉ0 राकेश कुमार गुप्ता, प्रवक्ता, समाजशास्त्र, गो.वि.वि. गोरखपुर, डॉ0 यदुनन्दन, सी.सी.एस. एन.ई.आर., गोरखपुर, डॉ0 सुरेन्द्र यादव, प्रवक्ता भौतिकी, जे.बी. महाजन डिग्री कालेज, चौरीचौरा, डॉ0 रामजनम गुप्ता, प्रवक्ता रसायन, पॉवा नगर महावीर पी. जी. कालेज फाजिलनगर : डा0 मृदुला गर्ग, प्रवक्ता स्कालर्स महिला महाविद्यालय गोरखपुर।

# कार्यक्रम समिति

## मुख्य संरक्षक

**प. पूज्य अवेद्यनाथ जी महाराज**

गोरक्षपीठाधीश्वर, गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर

## संरक्षक

**पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज**

मठाधिकारी गोरक्षपीठ, संसद सदस्य, लोक सभा

## अध्यक्ष

**डॉ० प्रदीप कुमार राव**

प्राचार्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

## उपाध्यक्ष

**डॉ० रत्नेश पाण्डेय,** प्रवक्ता अंग्रेजी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

## संयोजक / सचिव

**डॉ० विजय कुमार चौधरी,** प्रवक्ता भूगोल, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

## सदस्य

**डॉ० आर. एन. सिंह,** प्रवक्ता जन्तु विज्ञान, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० शिव कुमार बर्नवाल,** प्रवक्ता रसायन विज्ञान, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० अविनाश प्रताप सिंह,** प्रवक्ता राजनीति शास्त्र, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० अलका श्रीवास्तव,** प्रवक्ता गणित, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० सत्य पाल सिंह,** प्रवक्ता भौतिकी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० कृष्ण देव पाण्डेय,** प्रवक्ता वाणिज्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० ज्योति वर्मा,** प्रवक्ता हिन्दी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० स्नेहलता त्रिपाठी,** प्रवक्ता वनस्पति विज्ञान, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० आशुतोष कुमार सिंह,** प्रवक्ता समाज शास्त्र, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० राम मनोहर यादव,** प्रवक्ता भौतिकी, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० ऋषीश्वर मणि त्रिपाठी,** प्रवक्ता रसायन विज्ञान, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० अरविंद शुक्ला,** प्रवक्ता वाणिज्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० अभिषेक कुमार श्रीवास्तव,** प्रवक्ता गणित, महाराणा प्रताप महाविद्यालय

**डॉ० रजनीश मिश्र,** प्रवक्ता अर्थशास्त्र, दी०द०उ०गो०वि०वि०, गोरखपुर



Scanned with OKEN Scanner

# महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद

भारत के स्वाधीनता संग्राम में बालगंगाधर तिलक का युग समाप्त होते-होते कांग्रेस के नेतृत्व पर प्रश्न चिह्न खड़ा होने लगा था। 1920 के बाद क्रान्तिकारी आन्दोलन ने अलग राह पकड़ी और 1930-31 तक आते-आते कांग्रेस के स्पष्ट सहयोग के अभाव में क्रान्तिकारियों का दमन करने में ब्रिटिश हुकूमत सफल रही। 1915-16 के बाद के इसी काल खण्ड में स्वाधीनता संग्राम की अगुवा कांग्रेस मुस्लिम तुष्टीकरण की भी शिकार हुई। इस युग तक अंग्रेजों द्वारा भारत में अंग्रेजियत में रमे बाबुओं की फौज खड़ी करने की शिक्षा नीति का प्रभाव भी दिखने लगा था। देश के समक्ष एक चुनौती थी कि भारत की नयी पीढ़ी भारतीयता के साँचे में कैसे ढले। अपनी संस्कृति और स्वेदशी दृष्टि से शिक्षा प्रणाली और शिक्षा नीति ही एक मात्र इस चुनौती का समाधान था। इस चुनौती को भारतीय मनीषियों ने स्वीकार किया।

4 फरवरी 1916 ईस्वी को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय महामना मदन मोहन मालवीय के अथक प्रयास से लोकार्पित हो गया । भारतीय संस्कृति के प्रचार -प्रसार हेतु स्थापित यह विश्वविद्यालय पूरे देश में भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा पद्धति का एक मानक बना और इसी धारा को ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने आगे बढ़ाते हुए 1932 ईस्वी में गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की नींव रखी। ब्रिटिश हुकुमत को शिक्षा के भी क्षेत्र में भारतीय मनीषियों द्वारा यह कड़ी चुनौती थी कि भारत अपने पैरो पर खड़ा होने में समर्थ है, वह अपना तंत्र, अपनी शिक्षा, अपनी संस्कृति और अपने जीवन मूल्यों की पुनःस्थापना अपनी योजनानुसार करेगा। यह दूर-दृष्टि थी कि देश जब आजाद होगा तब तक देश की व्यवस्था चलाने हेतु भारतीय पद्धति के शिक्षण संस्थानों से निकले युवाओं की फौज तैयार मिलेगी।

देश पराधीन था। जनता विपन्न थी। ज्ञान कौशल के अभाव में स्वाभिमान और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की चेतना का जागरण दुष्कर था। ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने अपनी संकल्प शक्ति के बल पर आजादी के संघर्ष के एक पक्ष शैक्षिक क्रांति के पथ पर भी आगे बढ़े। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अर्न्तगत 1932 में बक्शीपुर में किराये के एक मकान में महाराणा प्रताप क्षत्रिय स्कूल प्रारम्भ हुआ । 1935 में इसे जूनियर हाईस्कूल की मान्यता मिल गयी और 1939 में यहाँ हाईस्कूल की पढ़ाई प्रारम्भ की गयी और इसका नाम 'महाराणा प्रताप हाईस्कूल' हो गया। इसी बीच ब्रह्मलीन महन्त जी के अथक प्रयास से गोरखपुर के सिविल लाइन्स में पांच एकड़ भूमि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद को प्राप्त हो गयी और महाराणा प्रताप हाईस्कूल का केन्द्र सिविल लाइन्स हो गया तथा देश के आजाद होते समय यह विद्यालय इन्टरमीडिएट कालेज के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

1949-50 में इसी परिसर में महाराणा प्रताप डिग्री कालेज की स्थापना महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का अगला पड़ाव था। अगस्त 1958 में ब्रह्मलीन महन्त जी ने महाराणा प्रताप डिग्री कालेज को गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु समर्पित किया और विश्वविद्यालय की स्थापना के आधार स्तम्भ बनें। वर्तमान गोरखपुर विश्वविद्यालय का वाणिज्य संकाय महाराणा प्रताप डिग्री कालेज भवन में चल रहा है तथा उसी परिसर में एम0बी0ए0, शिक्षा शास्त्र एवं वाणिज्य संकाय का नवीन भवन स्थित है। तत्पश्चात महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद ने ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नाम से वर्तमान दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना की, सम्प्रति यह विश्वविद्यालय परिसर से सटे महानगर का एक अति प्रतिष्ठित महाविद्यालय है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा वर्तमान में दर्जनों शिक्षण संस्थाएं गोरखपुर क्षेत्र में संचालित हो रही है। इनमें गोरखपुर महानगर में महाराणा प्रताप पालिटेक्निक, श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ, महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार एवं बालिका विद्यालय सिविल लाइन्स, दिग्विजयनाथ एल.टी. कालेज, महाराणा प्रताप टेलरिंग कालेज सिविल लाइन्स, महाराणा प्रताप शिशु शिक्षा विहार जू0 हा0 स्कूल रमदत्तपुर, लालडिग्गी, महाराणा प्रताप कृषक उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय जंगल धूसड़, दिग्विजयनाथ पूर्व माध्यमिक विद्यालय चौक माफी और महाराणा प्रताप मंगला देवी इन्स्टीच्यूट आफ कम्प्यूटर साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बेतियाहाता प्रमुख हैं। महराजगंज जनपद में दिग्विजयनाथ इन्टर कालेज चौक बाजार, दिग्विजयनाथ शिशु शिक्षा विहार चौक बाजार, परमहंस शिशु सदन सोनाड़ी जंगल प्रमुख प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाएं हैं। महाराणा प्रताप महाविद्यालय जगंल धूसड़ महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थाओं की कड़ी का अगला पड़ाव है।



Scanned with OKEN Scanner

# महाराणा प्रताप महाविद्यालय - हमारी योजनाएँ

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों की श्रृंखला में महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना प्रगति का अगला चरण है। गोरखपुर पिपराईच मार्ग पर महानगर से सटे जंगल-धूसड़ में महाविद्यालय की नींव की प्रथम ईंट गत वर्ष जुलाई माह में परम पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के कर कमलों द्वारा रखी गई। वर्तमान सत्र २००५-०६ से

संगोष्ठी में उपस्थित योगी आदित्यनाथ जी महाराज के साथ
प्रो० विजय बहादुर राव, प्रो० अशोक श्रीवास्तव, श्री राधेश्याम पालड़ीवाल

संगोष्ठी में उपस्थित महाविद्यालय के छात्र-छात्रायें

महाविद्यालय अध्ययन-अध्यापन हेतु तैयार है। गाँव तक उच्च शिक्षा के प्रसार को लक्ष्य कर महानगरीय महाविद्यालयों की तरह ही ग्रामीण क्षेत्र में इस महाविद्यालय की स्थापना की गई। इस सत्र से स्नातक कला, विज्ञान एवं वाणिज्य की पढ़ाई प्रारम्भ हो रही है। इस शिक्षा परिसर को एक केन्द्र बनाकर आगे परास्नातक कला, विज्ञान, वाणिज्य की पढ़ाई के साथ-साथ फार्मेसी, नर्सेज ट्रेनिंग सहित अन्य चिकित्सा शिक्षा के पाठ्यक्रमों तथा बी०बी०ए०, एम०बी०ए०,बी०सी०ए०, एम०सी०ए० आदि आधुनिक रोजगार परक शिक्षा पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने की योजना है। अत्याधुनिक पुस्तकालय, उच्च तकनीकी से युक्त प्रयोगशालयें और छात्र-छात्राओं के लिए छात्रावास की व्यवस्था हमारी प्राथमिकता है। गुणवत्तायुक्त एवं मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के एक मानक केन्द्र के रूप में विकसित किये जाने की योजना से स्थापित यह महाराणा प्रताप महाविद्यालय प्रथम सत्र से छात्र-छात्राओं को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ संस्कारयुक्त तथा भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति आग्रही

राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्घाटन समारोह मंचासीन प्रो. पी.सी. शुक्ल

महाविद्यालय के परिसर में प्रवेश करते प्रो. मुरली मनोहर जोशी
पूज्य महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के साथ

बनाने का भगीरथ प्रयास प्रारम्भ करेगा। अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण यह शिक्षण संस्थान पूर्वी उ०प्र० में एक कीर्ति स्तम्भ के रूप में खड़ा होगा। इस विश्वास के साथ प्रथम सत्र की शुरूआत की जारही है। हम इस बात का ध्यान रखकर इस शिक्षण संस्थान का परिसर वातावरण सृजित करेंगे कि यहाँ अध्ययन करने वाला युवा कैरियर के साथ-साथ देश और समाज के प्रति भी अपनी जवाबदेही महसूस करे। महाविद्यालय परिसर में शिक्षा और संस्कार दोनों पूरक बनें यही महाराणा प्रताप महाविद्यालय का मूल मंत्र होगा।

## हमारा प्रयास

- छात्र/छात्राओं की 75% उपस्थिति।
- योग्यता आधारित छात्र परिषद।
- शनिवार को छात्र परिषद् की बैठक।
- सप्ताह में एक दिन छात्र-छात्राओं द्वारा अध्यापन कार्य।
- मासिक योग्यता परीक्षा।
- द्वय-मासिक व्याख्यान प्रतियोगिता।
- मेडिकल, इन्जिनियरिंग एवं सिविल सर्विसेज की तैयारी।
- फरवरी माह में वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को ही विश्वविद्यालयी परीक्षा में सम्मलित होने की अनुमति एवं परीक्षा की तैयारी।
- अनुशासन एवं शैक्षिक वातावरण युक्त स्वच्छ परिसर।
- अत्याधुनिक पुस्तकालय, वाचनालय एवं सुसज्जित प्रयोगशालाएँ।

महाविद्यालय भवन का निरीक्षण करते प्रो. मुरली मनोहर जोशी

छात्र-परिषद को शपथ दिलाते पू. योगी आदित्यनाथ जी महाराज
साथ में प्रो. यू.पी. सिंह, प्रो. राम अचल सिंह

Scanned with OKEN Scanner

## राष्ट्रीय संगोष्ठी

# ग्रामीण भारत का भविष्य

### उपक्रम

यह राष्ट्रीय संगोष्ठी वर्तमान वैश्विक संदर्भ में ग्रामीण भारत के भविष्य से सम्बन्धित प्रासंगिक एवं सजीव विषय वस्तु पर प्रकाश डालने का अवसर प्रदान करती है। इस विषय–वस्तु का केन्द्र बिन्दु पर्यावरण एवं जनसंख्या है। यह प्रसंग अपने आप में एक अवसर है और चुनौती भी। अर्थव्यवस्था के वैश्विक रूप द्वारा देश की अर्थव्यवस्था को एक चुनौती का सामना करना पड़ रहा है जो बढ़ती जनसंख्या के दबाव अन्य जन्य पर्यावरणीय अवनयन के रूप में प्रकट हो रहा है। नई सहस्त्राब्दि की दहलीज पर उपलब्ध तकनीक, ज्ञान का विस्फोट एवं आध्यात्मिक उत्साह के रूप में यह एक अवसर है जो अपनी सामर्थ्य एवं सूझ–बूझ का कार्यरूप देने का सुयोग प्रदान करता है। आध्यात्मिक उत्साह प्रकृति के मानवीकरण से उत्पन्न विषाक्त प्रभावों को संयोजित करने की शक्ति रखता है। मनुष्य द्वारा प्रकृति के दोहन से सांस्कृतिक विरासत का क्षरण हो रहा है, सामाजिक एकता कमजोर हो रही है, जैव विविधता न्यून हो रही है तथा मानव पारिस्थितिकी का अवनयन मूर्त रूप में प्रकट हो रहा है। फलतः भारत जैसे ग्रामों के देश का भविष्य संकट में है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय संगोष्ठी ने कुछ चुनिंदा विषय–वस्तुओं एवं विशिष्ट प्रदेशों के परीक्षण एवं विचार–विमर्श हेतु विद्वतजनों, विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों एवं प्रतिभागियों को आमंत्रित किया है जिसके परिणाम स्वरूप कतिपय सुझावों को रेखांकित किया गया है जो ग्रामीण भारत के भविष्य को ज्योतिर्मय बनाने की क्षमता रखते हैं।

विश्व परिदृश्य का अवलोकन स्पष्ट करता है कि एक समान अर्थव्यवस्था, तकनीकी एवं सूचना स्तर के देशों का समूहन होना प्रारम्भ हो गया है। ये राष्ट्र अपने निश्चेष्ट हुए प्राकतिक संसाधनों की भरपाई ऐसे देशों में करना चाहते हैं जिनकी अर्थव्यवस्था कमजोर है तथा तकनीकी एवं सूचना स्तर भी निम्न है। विश्व व्यापार संगठन (WTO) द्वारा संसार में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एवं विनिवेश की नीतियों को प्रोत्साहन ऐसे देशों में दिया जा रहा है जो संगठनात्मक दृष्टि से कमजोर हैं। ऐसे प्रयास सम्बन्धित राष्ट्रों की प्रभुसत्ता को कमजोर कर सकते हैं। प्राच्य देशों की सांस्कृतिक विविधता, धर्म, आस्था, भाषा एवं जनतांत्रिक गठन का क्षरण करने में ऐसी अध्यारोपित विदेशी व्यापार संस्कृति का विशेष योगदान है और भारत जैसे देश इसके शिकार हो रहे हैं। भारत की जनसंख्या एक अरब से ऊपर है। ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमशक्ति के अभाव का कारण ग्राम से नगर की ओर जनसंख्या का पलायन है। आयतित आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण एवं सूचना विस्फोट से भारत की देशज जीवन पद्धति संकट में है। भारत का व्यक्तित्व खतरे में प्रतीत होता है। सर्व ज्ञात है कि सामाजिक परिवर्तन विकासकारी शक्तियों से होता है लेकिन जो शक्तियाँ आज समाज के संगठन को प्रभावित कर रही हैं वे सामान्य विकास की प्रक्रिया को अवरूद्ध कर रही हैं। अतः वे अवमूल्यनकारी शक्तियाँ हैं। ग्रामीण भारत का रूपांतरण उसकी अंतर्निहित प्रथाओं, विविधयों, नीतियों एवं स्व–स्फूर्त गतिशीलता के कारण हो रहा है। अतः विचारणीय है कि–

I. क्या भारत कृषि का देशज व्यक्तित्व संकट में है?

II. क्या आधुनिकीकरण से भारत के सांस्कृतिक व्यक्तित्व का क्षरण हो रहा है?

III. क्या वैश्वीकरण से सामाजिक मूल्य एवं आचार–व्यवहार जोखिम में हैं?

IV क्या जनसंख्या का दबाव पर्यावरण एवं संसाधनों की गुणवत्ता में ह्रास ला रहा है?

V किस सीमा तक ग्रामीण भारत संरक्षण तकनीक, वैकल्पिक ऊर्जा तथा सूचना विस्फोट के प्रभाव को आत्मसात कर सकता है?

## उद्देश्य

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य यह पूर्वानुमान करना है कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ग्रामीण भारत की सक्रिय भूमिका क्या हो सकती है? भारत की आत्मा ग्रामों में निवास करती है। ग्रामीण भारत में यह क्षमता एवं सामर्थ्य है कि वह भारतीय उपमहाद्वपी के परिवर्तनशील व्यापार–राजनीतिक परिदृश्य का संचालन कर सकता है। तद्नुसार इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में विपुल कृषि उत्पादन, जैव विविधता, वन एवं वन्य जीवों का बाहुल्य, सुलभ खनिज, मध्यम औद्योगीकरण, सबल तंत्र तथा संपुष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं पर गहन विचार विमर्श किया गया।

## ग्रामीण भारत के आयाम

### 1. जातीय एवं प्रजातीय भारत का प्रतिरूप

- ग्रामीण जनसंख्या की गत्यात्मकता
- शिशु स्वास्थ्य, लिंग भेद एवं महिला सशक्तीकरण
- जातीय भारत एक राजनीतिक परिदृश्य
- जातीय भारत के मानवीय आयाम एवं मानवाधिकार
- जातीय गत्यात्मकता
- अरण्य संस्कृति का बदलता प्रतिरूप
- द्वीपीय अरण्य संस्कृति

### 2. शिल्प विज्ञानी भारत का प्ररूप

- जैव प्रौद्योगिकी एवं कृषि
- जैव प्रौद्योगिकी एवं मानव समाज
- ग्रामीण भारत में शाश्वत ऊर्जा के प्रतिरूप एवं सम्भावनाएँ
- प्रौद्योगिकी एवं आपदा प्रबंधन प्रतिरूप
- ग्राम–नगर सातत्व

### 3. अनुप्राणित भारत–प्रक्रिया एवं प्रतिरूप

- सूचना विस्फोट एवं ग्रामीण जीवन पद्धति के बदलते प्रतिरूप
- पंचायती राज व्यवस्था में जन–भागीदारों
- जैव राजनीति एवं ग्रामीण भारत

### 4. जैव–विविधता एवं ग्रामीण भारत

- औषधीय वनस्पति प्रतिरूप एवं सम्भाव्यता
- कृषि पद्धतियाँ एवं जैव–विविधता
- पशुचारण पद्धतियाँ एवं पारिस्थतिकी
- राष्ट्रीय वन्य उद्यान/अभ्यारण्य/शरण्य वितरण प्रतिरूप एवं जैव संरक्षण
- जैव विविधता एवं जीवन की गुणवत्ता

## 5. धर्मसार भारत का प्रादेशिक प्रतिरूप

- ❋ धर्म–सामाजिक समन्वयन एवं समरसता
- ❋ धर्म एवं ग्रामीण भारत
- ❋ धर्मान्तरण एवं धार्मिक जनसंख्या की संरचना में परिवर्तन
- ❋ प्राचीन/मध्यकालीन भारत में दुर्ग पारिस्थितिकी एवं सामाजिक संगठन
- ❋ अपराधों का भूगोल और ग्रामीण भारत

## प्रस्तुत शोध प्रपत्र

इस शोध संगोष्ठी में मुख्य विचारधारा से सम्बन्धित 25 विचारणीय बिन्दुओं की पहचान की गई थी जिनमें से 23 बिन्दुओं से संदर्भित 208 शोध प्रपत्रों की प्रस्तावना प्राप्त हुई थी। संगोष्ठी में 186 प्रतिभागियों ने आयोजन स्थल पर उपस्थित होकर अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए तथा कुल 82 तकनीकी सत्रों में प्रस्तुत किये गये। इसके अतिरिक्त उद्घाटन एवं समापन सत्र, विशिष्ट व्याख्यान, विशिष्ट तकनीकी सत्र तथा 'मुक्त विचार मंच' का भी आयोजन किया गया। ये सभी सत्र सामान्य सत्र के रूप में आयोजित हुए जिनमें विषय विशेषज्ञों के साथ प्रतिभागियों एवं आमंत्रित अतिथियों ने भी भाग लिया। भूगोल विषय के अलावा अर्थशास्त्र, वाणिज्य, मनोविज्ञान, समाज विज्ञान, मानचित्र कला प्रबन्धन, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, शिक्षा शास्त्र, प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान आदि विषयों के विद्वानों ने संगोष्ठी में भाग लिया। प्रत्येक प्रस्तुति के बाद सम्बन्धित विषय वस्तु पर विचार–विमर्श भी किया गया।

**शनिवार, 7 जनवरी, 2006**

**उद्घाटन सत्र**

**समय : 11.00 – 1.00 बजे**

**विशिष्ट व्याख्यान**

**समय : 2.30 से 4.00 बजे**

**प्रथम तकनीकी सत्र**

**समय : 4.30 बजे से 5.30 बजे**

**जातीय एवं प्रजातीय भारत का प्रतिरूप**

**द्वितीय तकनीकी सत्र**

**समय : 4.30 से 5.30 बजे**

**शिल्प विज्ञानी भारत का प्रतिरूप**

**सामूहिक वार्ता**

**समय : 5.45 से 7.30 बजे**

**रविवार : 8 जनवरी, 2006**

तृतीय तकनीकी सत्र
समय : 9.00 से 10.30 बजे

चतुर्थ तकनीकी सत्र
समय : 9.00 से 10.30 बजे

विशिष्ट व्याख्यान
समय : 10.40 से 11.30 बजे

पंचम तकनीकी सत्र
समय : 11.50 से 1.20 बजे

षष्टम तकनीकी सत्र
समय : 11.50 से 1.20 बजे

विशिष्ट व्याख्यान
समय : 2.30 से 3.30 बजे

सप्तम् तकनीकी सत्र
समय : 3.40 से 5.30 बजे

अष्टम् तकनीकी सत्र
समय : 3.40 से 5.30 बजे

सोमवार, 9 जनवरी 2006
विशिष्ट व्याख्यान
समय : 9.00 से 10.30 बजे

सोमवार : 09 जनवरी, 2006
विशिष्ट तकनीकी सत्र
समय : 10.40 से 12.15 बजे

समापन सत्र
समय : 12.30 से 2.30 बजे

# राष्ट्रीय संगोष्ठी

# ग्रामीण भारत का भविष्य

7.9 जनवरी 2006

कार्यक्रम स्थल: महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ , गोरखपुर

**दिनाँक 07.01.2006**

| समय | स्थान/कक्ष | कार्यक्रम |
|---|---|---|
| 11. 00-01.00 | लॉन | **उद्घाटन सत्र** |
| 01.00-02.10 | | **मध्यान भोजन** |
| 02.30-03.50 | | **विशेष व्याख्यान** |
| | | अध्यक्ष — प्रो० राधे मोहन मिश्र, प्रो० एन.के.डे |
| | | आख्यादाता — डॉ० जे.पी. राय |
| | | मुख्य वक्ता — प्रो० एस.एन. प्रसाद, प्रो० आर.एस. दुबे |
| 04.30-05.30 | म.मो.मालवीय | **प्रथम तकनिकी सत्र** |
| | | जातीय एवं प्रजातीय भारत का प्रतिरूप |
| | | अध्यक्ष — प्रो० वाई.जी.जोशी, प्रो० जे.एन.पाण्डेय |
| | | आख्यादाता — डॉ० शिवाकांत सिंह |

**जातीय एवं प्रजातीय भारत का प्रतिरूप**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | अनुपमा दीक्षित | जनपद जौनपुर (उ०प्र०) में जनसंख्या वितरण प्रतिरूप |
| 2. | डॉ० तारकेश्वर सिंह<br>डॉ० आनन्द सिंह | जनसंख्या विस्फोट जनित पारिस्थितिकी अवनयन एवं पर्यावरण प्रबंधन |
| 3. | डॉ० शेष नारायण पाण्डेय | ग्रामीण शिक्षा के बदलते प्रतिरूप शिक्षा मित्र योजना |
| 4 | बी०सी० श्रीवास्तव<br>डॉ० राम नयन राम | प्रबन्धन एवं सतत् विकास जनसंख्या, पर्यावरण एवं सामाजिक मुद्दे- एक दृष्टि<br>मध्यसोन वेसिन में नगरीकरण का स्तर |
| 5. | Md. Mustaquim and Enayat Ullah | Regional Analysis of Female Employment Rate in West Bangal |
| 6. | प्रो० एम० एन० निगम | मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता |
| 7. | डॉ० जय प्रकाश राय | निचले सोन बेसिन की ग्रामीण जनसंख्या का प्रादेशिक विश्लेषण : एक विधितंत्रात्मक अध्ययन |
| 8. | Mrs. Amrita Shahi<br>Dr. (Mrs.) Shakti Singh<br>Mrs. Divya Rani Singh | Latest Concept in Relation to Lactating Mothers & Infant Health |
| 9. | डा० (श्रीमती) शक्ति सिंह एवं श्रीमती नीलम वैश्य | बच्चों में कुपोषण कारण तथा निवारण |
| 10. | कु० स्वाति श्रीवास्तव | लिंग भेद एवं महिला सशक्तीकरण |
| 11. | श्रीमती सरिता त्रिपाठी | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लिंग भेद व महिला सशक्तीकरण |
| 12. | डॉ० अर्चना तिवारी | खाद्य असुरक्षा, भूख और ग्रामीण महिलाओं की स्थिति |
| 13. | *उदिता मणि त्रिपाठी* | ग्रामीण क्षेत्रों में महिला कुपोषण की समस्या |

Scanned with OKEN Scanner

| | | |
|---|---|---|
| 14. | Joydip Chakraborty<br>Dr. A.R.Chandraker | Dietary Habits & Nutritional Status of the People of Village mungeli |
| 15 | Uzama Parveen | Women and Child Care :A Case study of Aligarh City |
| 16 | Saba Anjum | Women : An integral yet ignored part of the society |
| 17. | डॉ० कुमकुम रानी श्रीवास्तव | स्वरोजगार एवं महिला सशक्तीकरण |

04.30-05.30 वीर सावरकर **द्वितीय तकनिकी सत्र**

शिल्प विज्ञानी भारत का प्रतिरूप

अध्यक्ष — प्रो० आर.एस.दुबे
प्रो० शिवशंकर वर्मा

आख्यादाता — डॉ० चन्द्र शेखर सिंह

| | | |
|---|---|---|
| 1. | Smt. Hani Misra<br>Dr. Sangeeta Chauahan | Biotechnology and Agriculture |
| 2. | राजेन्द्र कुमार सिंह | प्रकृति का वरदान 'बायोडीजल |
| 3. | सुभाष कुमार | खाद्यान्नों में घुलता जहर : जैव कृषि |
| 4. | Dr. Indra Deo Pandey | Present Status and Future Prospects of Biotechnology in Agriculture |
| 5. | Dr. Swarn Lata | Biotechnology and Animals |
| 6. | Indrajeet Debnath | SMALL SCALE COTTON INDUSTRY A CASE STUDY OF NADIA DISTRICT (W.B.) |
| 7. | Dr. Shiv Kumar Vernwal | Chemical Aspects of Mustard Grain |
| 8. | Dr.Hari Ram Yadav | Implication OF Bio-Technology IN Rural India |
| 9. | Dr. D.D.MAITHANI | ENERGY RESOURCES FOR SUSTAINABLE RURAL DEVELOPMENT IN GAHAWAL HIMALAYA |
| 10. | डॉ० चन्द्र प्रकाश सिंह<br>डॉ० मनोज कुमार सिंह | ग्रामीण भारत में शाश्वत ऊर्जा का प्रतिरूप एवं सम्भावनाएं |
| 11. | डॉ. विजय कुमार चौधरी<br>डॉ. प्रदीप कुमार राव | ग्रामीण भारत में शाश्वत ऊर्जा के प्रतिरूप एवं सम्भावनाएँ |
| 12. | डॉ० प्रेम प्रकाश राजपूत | ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा उपयोग का बदलता परिदृश्य |
| 13. | प्रमोद कुमार | ग्रामीण भारत में शाश्वत ऊर्जा के प्रतिरूप एवं सम्भावनाएं |
| 14. | Dr. S.K. Singh | "Watershed Development Approach for Sustainable Rural Development" |
| 15. | Anita Singh, D.K. Kuity<br>Likesh Kumar Nayak<br>डॉ० हरिन्द्र यादव | Coal Mining and Its Impact on Chharla Village District Jharsuguda, Orissa. |

05.30-06.00 **जलपान**

06.00-07.30 म०मो०मालवीय **सामूहिक वार्ता**

अध्यक्ष — प्रो० आर.पी. मिश्र
मुख्य वक्ता — प्रो० डी.के. सिंह
प्रो० एस.एन. प्रसाद
प्रो० आर.एस. दुबे
प्रो० नूर मुहम्मद

08.00-09.00 **रात्रि भोजन**

08.00-09.00 **नाश्ता सुबह**

Scanned with OKEN Scanner

09.00-10.30 म०मो०मालवीय **प्रथम तकनिकी सत्र**

जातीय एवं प्रजातीय भारत का प्रतिरूप

अध्यक्ष प्रो० नूर मुहम्मद

प्रो० एस.के.दीक्षित

आख्यादाता डॉ० महातम प्रसाद

| | | |
|---|---|---|
| 1. | संतोष कुमार यादव<br>शीतल कुमार बंछोर एवं टिके सिंह | ग्रामीण छत्तीसगढ़ में शिशु मर्त्यता रायपुर जनपद का प्रतीक अध्ययन |
| 2. | Dr. B.P. Agrawal & Dr.S.S. Katare | THE BAIGA UPLIFT |
| 3. | सीता पाण्डेय | भारतीय जनजातियों का बदलता परिदृश्य |
| 4. | आस्था प्रकाश | ग्रामीण विकास में विभिन्न शैक्षिक स्तर की छात्राओं की भूमिका |
| 5. | डॉ० लाल चन्द्र यादव | आधुनिकीकरण के आड़ में बदलते जीवन मूल्य |
| 6. | डॉ० तुलसीदास पासवान | भू स्वामित्व एवं मानवाधिकार |
| 7. | Dr. M.N. Nigam | Social Climate And Planning In Rural Areas |
| 8. | डा० लोकेश श्रीवास्तव | मध्य प्रदेश की जनजातीय जनसंख्या, संरचना विकास की समस्यायें एवं निदान |
| 9. | डॉ० विजय कुमार तिवारी<br>महेन्द्र कुमार दुबे | अनुसूचित जनजातियों के श्रमिकों का मौसमी प्रवास |
| 10. | हरिश्चन्द्र मिश्र, डॉ० शिवाकान्त सिंह | ग्रामीण बच्चों की दशा-दिशा |
| 11. | डॉ० (श्रीमती) रेखा तिवारी | प्रतापगढ़ तहसील में ग्रामीण जनसंख्या गत्यात्मकता |
| 12. | अनूप राय | मालवा प्रदेश (म०प्र०) में जनसंख्या वृद्धि का प्रतिरूप एवं प्रभाव |
| 13. | डॉ० लोकेश श्रीवास्तव | भारत में जनजातीय जनसंख्या की संरचना एवं विकास |
| 14. | डॉ० भारत भूषणृ | आधुनिकीकरण और ग्रामीण भारतीय संस्औति का बदलता स्वरूप |
| 15. | डॉ० लोकेश श्रीवास्तव<br>कु० ऋतु रानी प्रजापति | बैगा जनजाति का बदलता सांस्कृति परिवेश |
| 16. | प्रो० यशवंत गोविंद जोशी | भारत के मध्यवर्तीय जनजाति क्षेत्र में आदिवासी विकास की समस्याएं एवं चुनौतियाँ |

09.00-10.30 वीर सावरकर **तृतीय तकनिकी सत्र**

अनुप्राणित भारत का प्रतिरूप

अध्यक्ष प्रो० आर.के.राय

प्रो० बी.एन.मिश्र

आख्यादाता डॉ० मुकुन्द शरण त्रिपाठी

| | | |
|---|---|---|
| 1. | डॉ०संजीत कुमार गुप्ता | ग्रामीण जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी |
| 2. | डॉ० प्रदीप कुमार राव<br>डॉ० विजय कुमार चौधरी | सूचना विस्फोट एवं ग्रामीण जीवन पद्धति |
| 3. | डॉ० नीति शर्मा | नवाचार प्रसरण एवं ग्रामीण विकास |
| 4. | डॉ० कैलाश नाथ तिवारी | विपणन स्थल की आकारिकी परिवहन मार्ग एवं केन्द्रस्थलीय क्रिया-कलाप एवं गाजीपुर जनपद के ग्रामीण संदर्भ में |
| 5. | डॉ. मनोज कुमार सिंह | सूचना विस्फोट एवं ग्रामीण जीवन पद्धति के बदलते प्रतिरूप |
| 6. | Dr. R.A. Prasad, Dr. Anil Pal | Remote Sensing and Geographicla Information System Application in Drought Assessment |
| 7. | Dr. Rekha Devi | Role of Rural Credit in Rural Development |
| 8. | Dr. Mrs. Mukul Mukherjee | Role of Home Science Education in Rural Development |
| 9. | डा०धनंजय सिंह, डा० महातम प्रसाद | पूर्वी उत्तर-प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार एवं प्रभाव |
| 10. | बृजेश कुमार सिंह | पंचायती राज्य व्यवस्था में जन भागीदारी |
| 11. | सीता पाण्डेय | ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति और पंचायती राज व्यवस्था |
| 12. | आशुतोष कुमार सिंह | पंचायती राज व्यवस्था में जन-भागीदारी |
| 13. | Dr. Ratnesh Kumar Pandey | Common Civil Code is Indispensable for the Unity and Progress of India |
| 14. | दिवाकर सिंह | पंचायती राज व्यवस्था में जन भागीदारी और ग्रामीण विकास |
| 15. | सुकचन्द नेताम, दुर्गापद कुइति | पंचायती राज व्यवस्था में जन भागीदारी |
| 16. | राजेश कुमार पटेल | पंचायती राज व्यवस्था में जन-भागीदारी |

Scanned with OKEN Scanner

| | | |
|---|---|---|
| 17. | प्रो०एस०के० दीक्षित | भारत में राष्ट्र-राज्य की अवधारणा का पुनरीक्षण |
| 18. | डॉ० अर्चना शुक्ला | राष्ट्रीय विकास में पंचायती राज व्यवस्था और जन सहभागिता |
| 19. | प्रो० वी० के० श्रीवास्तव | जैव संस्कृति एवं ग्रामीण विकास |
| 20. | Rishishwar Mani Tripathi | Integrated Plant Nutrient Management And Green Revolution |

09.00-10.30 **चाय**

10.40-11.40 म०मो०मालवीय **विशेष व्याख्यान**

अध्यक्ष प्रो० एस.एन. प्रसाद
प्रो० शिवाजी सिंह

आख्यादाता डॉ० एस.पी.एल. श्रीवास्तव

मुख्यवक्ता प्रो० एन.के.डे
प्रो० एस.के.शुक्ला

11.40-11.50 **चाय**

11.50-01.20 म०मो०मालवीय **चतुर्थ तकनिकी सत्र**

जैव-विविधता एवं ग्रामीण भारत

अध्यक्ष प्रो० एच.एन.मिश्र
प्रो० एस.के. शुक्ल

आख्यादाता डॉ० स्वर्णलता

| | | |
|---|---|---|
| 1. | डॉ०एम०एल०गुप्त | ग्रामीण भारत में औषधीय वृक्षों एवं वनस्पतियों की उपयोगिता तथा महत्व |
| 2. | Chhamta Srivastava | DIVERSITY OF MEDICINAL MONOCOTS OF EASTERN UTTAR PRADESH |
| 3. | Chhaya Pandey | Traditional Medicinal Plant Therapy Used For Skin Care by |
| 4. | Pratibha Singh, Kshama Tripathi | Organic Farming A New Vista in Agriculture |
| 5. | शंकरलाल दुर्गापद कुइति | रायपुर शहर के तालाबों का अस्तित्व |
| 6. | पुष्पेन्द्र कुमार सिंह | कृषि पद्धतियाँ एवं जैव विविधता |
| 7. | *डॉ० एस० पी० एल० श्रीवास्तव* | कृषि उत्पादकता का स्थानिक प्रतिरूप- एक प्रतीक अध्ययन |
| 8. | डॉ० नीति शर्मा, डॉ० शीराज़ अ० वजीह | बाढ़ समस्या एवं अनुकूलन नीति |
| 9. | Dr.Md Minhajul Hoda | Present Status of Indian Agricultural Marketing and its effects on Rural Transformation: A Case Study |
| 10. | Prof. Noor Mohammad | Future Trends In Indian Agriculture |
| 11. | Dr. Mhaske P.H. | AGRICULTURAL MARKETING DEVELOPMENT |
| 12. | Dr. Umesh Chandra Mishra | Impact of Technology on Agruculture |
| 13. | Dr. N.K. De | Land And Land Management In Rural India |
| 14. | प्रो० एस. सी. त्रिपाठी | भारतीय चिन्तन एवं पर्यावरण |
| 15. | Zeba Siddiqui | Regulated Markets and Rural Transformation |
| 16. | Dr. Ajit Kumar Bera | Contaminated Groundwater and Health Hazards in Rural Areas of West Bengal |

11.50-01.20 वीर सावरकर **द्वितीय तकनिकी सत्र**

शिल्प विज्ञानी भारत का प्रतिरूप

अध्यक्ष प्रो० कमलेश मिश्र
डॉ० रामदेव त्रिपाठी

आख्यादाता डॉ० दिव्या रानी सिंह

| | | |
|---|---|---|
| 1. | B.B.L. Sharma | Sustainability of Arid Ecosystem in western Rajasthan Problem indntification, management and peoples participation |
| 2. | डॉ० चन्द्रशेखर सिंह | पर्यावरणीय प्रदूषण : एक भौगोलिक सिंहावलोकन |
| 3. | SatyaPal Singh | How To Overcome the Energy Crisis in the Perspective of the Rural Development Of India |
| 4. | Kunal Gaurav | Future of Rural India : from marketer's point of View |

Scanned with OKEN Scanner

| | | |
|---|---|---|
| 5. | Dr. A.Sengupta,<br>Dr. N. K. Bakhshi<br>J.P.Yadav | Rural Consumers Behaviour in the Fringe Areas of Gorakhpur City |
| 6. | डॉ० चन्द्रकान्त चौबे | भारत में बेरोजारी की समस्या-एक पुनरावलोकन |
| 7. | चन्द्र मिलन वर्मा | ग्रामीण जन प्रव्रजन |
| 8. | डॉ० कौस्तुभ नारायण मिश्र | ग्रामीण विकास और भूवैन्यासिक संगठन |
| 9. | डा० अनिल कुमार गुप्त | ग्रामीण विपणन केन्द्र और नवाचारों का प्रसार |
| 10. | डॉ० पी.आर.चौहानए कमलेश कुमार मौर्य | भारत में नगरीकरण का ग्रामीण क्षेत्रों पर प्रभाव |
| 11. | सुधीर कुमार मिश्र | भूमि उपयोग प्रतिरुप एवं ग्रामीण अर्थतन्त्र का नियोजन |
| 12. | डॉ० दुर्गा प्रसाद यादव | नगर उपान्त क्षेत्र के नियोजन की आवश्यकता |
| 13. | यदुनन्दन प्रसाद, राजेश कुमार आर्य | आजमगढ़ जनपद में आवर्ती विपणन केन्द्र एवं कृषि विकास |
| 14. | डॉ० नरेन्द्र कुमार शर्मा | ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास |

01.20-02.00 **भोजन**

02.00-03.30 म०मो०मालवीय **विशेष व्याख्यान**

**अध्यक्ष** प्रो० वी०के० श्रीवास्तव

**आख्यादाता** डॉ० आदेश अग्रवाल,

**विशिष्ट वक्ता** प्रो० पी.आर.चौहान

प्रो० एस.के. दीक्षित

प्रो० वी.के. तिवारी

09.00-10.30

03.30-03.40 **चाय**

03.40-04.30 वीर सावरकर **चतुर्थ तकनिकी सत्र**

जैव-विविधता एवं ग्रामीण भारत

**अध्यक्ष** प्रो० वी.के. तिवारी

डॉ० कमल

**आख्यादाता** धनंजय सिंह

| | | |
|---|---|---|
| 1. | डॉ० अशोक कुमार जायसवाल | वृष्टिछाया प्रदेश में धान की कृषि के विशेष सन्दर्भ में जैव-विविधता |
| 2. | Kaneez Zaman | Pattern of Agricultural Productivity in Ganga-yamuna Doad |
| 3. | Dr.Nizamuddin Khan | Socio-Economic Behaviour of Marketing of Vegetables, Aligarh District |
| 4. | Dr.S.Chattopadhyay | Land Evaluation Methodological issue in the Development of Rural India A case study |
| 5. | Luban Khalil | Pattern of Crop Productivity in Aligarh District |
| 6. | Dr. Umesh Chandra Mishra | Impact of Technology on Agruculture A case study of Deoria |
| 7. | Prof. R.K. Rai | Shifting Cultivation and its impact on Environment in Meghalaya |
| 8. | Ms.Rukhsana | FOODGRAIN AVAILABILITY AND FOOD SECURITY |
| 9. | Dr. Niranjan Dash | The Marketing Mechanis and Pricing of Farm Produce in Rural India |
| 10. | Khundrakpam Moirangleima | DEGRADATION OF THE WETLAND ECOSYSTEM |
| 11. | Dr. Pratibha Singh | Organic Farming-A New Vista in Agriculture |
| 12. | A.K.Srivastava Jr<br>S.N. Lal | Management and Conservation of Biodiversuty of Gorakhpur |
| 13. | डॉ० अविनाश कुमार सिंह | पंचायती राज व्यवस्था में जन सहभागिता |
| 14. | सुनील कुमार प्रसाद | छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिले में जल संसाधनों का भौगोलिक |
| 15. | Md. Akhtar Hasin ur Rahaman | The Role of Women in Sericlture and its Effects on |
| 16. | ASIF IQUBAL | Role of Women Labour in Animal |
| 17. | LIKESH KUMAR NAYAK | Grazing practices and Ecosystem |
| 18. | Snehlata Tripathi | Diversity Patterns and Association |
| 19. | नवीन कुमार मिश्र | जैव-विविधता एवं संरक्षण |

Scanned with OKEN Scanner

03.40-04.30

## पंचम तकनिकी सत्र

धर्मसार भारत का प्रादेशिक स्वरूप

अध्यक्ष डॉ० चट्टोपाध्याय

डॉ० डी.के. बेरा

आख्यादाता डॉ० हरि राम यादव

| | | |
|---|---|---|
| 1. | डॉ० सुदीप्ता बी० भूषण | समाजिक समन्वयन एवं समरसता हेतु भारतीय कला-धर्म |
| 2. | डॉ० बलवान सिंह | धर्म-सामाजिक समन्वयन एवं समरसता |
| 3. | Dr. Reena Agarwal | Entrepreneurship in Rural India |
| 4. | Richa Srivastava<br>Dr. Niti Sharma | Population Characteristics of Arunachal Pradesh |
| 5. | Dr. Jugesh Pegu | Evolution of Tribal Market Centres of Mahabharat |
| 6. | Dr. Sheela Srivastava | Modernization of Rural India |
| 7. | Rudvik | Cell-Phone Technology and Rural Transformation A Survey |
| 8. | Prof. Prajna Shrivastava | Knowledge Management and Women in Powerment |
| 9. | डॉ. जी.एल. श्रीवास्तव<br>डॉ. ममता श्रीवास्तव | धार्मिक पर्यटन एवं ग्रामीण भारत का विकास |
| 10. | Prajna Shrivastava | Rural Retailing in India |
| 11. | डॉ० मुकुन्द शरण त्रिपाठी | प्राचीन भारत में दुर्गो की संकल्पना |
| 12. | डॉ. कृष्ण देव पाण्डेय | ग्रामीण विकास में बैंकों की भूमिका |
| 13. | डॉ. नीरज कुमार सिंह | ग्रामीण विकास में बैंकों की भूमिका |
| 14. | Dr. SANDEEP KUMAR | Poverty And Unemployment in Rural India |
| 15. | डॉ० चन्द्रकान्त चौबे | भारत में बेरोजारी की समस्या-एक पुनरावलोकन |
| 16. | Ajay Kumar Gandhi | Black Holes |

04.30-04.45 **जलपान**

04.45-06.30 म०मो०मालवीय **विशेष व्याख्यान**

अध्यक्ष प्रो० सदानंद गुप्त

डॉ० बी.पी. अग्रवाल

आख्यादाता डॉ० परमहंस पाठक

प्रमुख वक्ता प्रो० एच.एन.मिश्र

प्रो० आर.के. राय

07.00-08.00 **सांस्कृतिक संध्या**

08.00-09.00 **भोजन**

09.00-10.00 **विशिष्ट तकनिकी सत्र**

अध्यक्ष प्रो० एस.सी.त्रिपाठी

डॉ० लोकेश श्रीवास्तव

आख्यादाता कैलाश तिवारी

Scanned with OKEN Scanner

10.00-11.00 **विशेष व्याख्यान**

महिला सशक्तीकरण

**अध्यक्ष** डॉ० शीला सिंह

डॉ० कुमकुम श्रीवास्तव

**आख्यादाता** प्रज्ञा श्रीवास्तवा

**विशिष्ट वक्ता** डॉ० मधु झुनझुन वाला

डॉ० रेखा देवी

11.00-11.10 **चाय**

11.00-10.00 **विशेष व्याख्यान**

**अध्यक्ष** डॉ० प्रो० यू.पी. सिंह

**आख्यादाता** डॉ० निरंजनदास

**विशिष्ट वक्ता** डॉ० भरत झुनझुनवाला

डॉ० डी.के. सिंह

01.00-02.00 **भोजन**

02.00-03.30 **समापन सत्र**

**अध्यक्ष**

**मुख्य अतिथि** डॉ० भरत झुनझुन वाला

*नोटः- विशेष परिस्थिति में कार्यक्रम में संशोधन सम्भावित है।*

Scanned with OKEN Scanner

# ग्रामीण भारत का भविष्य

MPM LIBRARY 127/03
2362

## राष्ट्रीय संगोष्ठी

7-9 जनवरी, 2006

भूगोल विभाग

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, गोरखपुर
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

Scanned with OKEN Scanner

राष्ट्रीय संगोष्ठी

# ग्रामीण भारत का भविष्य

7-9 जनवरी, 2006

भूगोल विभाग

# शोध सारांश


डॉ0 प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य

डॉ0 विजय कुमार चौधरी
संयोजक

सुभाष कुमार
सह-संयोजक



262 स०
महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़
गोरखपुर



**महाराणा प्रताप महाविद्यालय**

जंगल धूसड़, गोरखपुर

# अनुक्रमणिका


- संदेश — राष्ट्रपति सचिव
- संदेश — महन्त अवेद्यनाथ जी
- अनुक्रमणिका

| क्र० | नाम | शोध पत्र शीर्षक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1. | Prof. D.K. Singh | Commnnicative Interactive Model fo District Leval Ruralr Development Planning | 1 |
| 2. | Prof. V.K. Shrivastava | From Geo-Marketing to Bio-Marketing: Some Refelections | 4 |
| | | **जातीय एवं प्रजातीय भारत का प्रतिरूप** | |
| 3. | अनुपमा दीक्षित | जनपद जौनपुर (उ०प्र०) में जनसंख्या वितरण प्रतिरूप | 9 |
| 4. | डॉ० तारकेश्वर सिंह<br>डॉ० आनन्द सिंह | जनसंख्या विस्फोट जनित पारिस्थितिकी अवनयन एवं पर्यावरण प्रबंधन | 10 |
| 5. | डॉ० शेष नारायण पाण्डेय | ग्रामीण शिक्षा के बदलते प्रतिरूप शिक्षा मित्र योजना | 12 |
| 6 | बी०सी० श्रीवास्तव | प्रबन्धन एवं सततू विकास जनसंख्या, पर्यावरण एवं सामाजिक मुद्दे- एक दृष्टि | 13 |
| | डॉ० राम नयन राम | मध्यसोन वेसिन में नगरीकरण का स्तर | 13 |
| 7. | Md. Mustaquim and Enayat Ullah | Regional Analysis of Female Employment Rate in West Bangal | 14 |
| 8. | प्रो० एम० एन० निगम | मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता | 15 |
| 9. | डॉ० जय प्रकाश राय | निचले सोन बेसिन की ग्रामीण जनसंख्या का प्रादेशिक विश्लेषण : एक विधितंत्रात्मक अध्ययन | 17 |
| 10. | Mrs. Amrita Shahi<br>Dr. (Mrs.) Shakti Singh<br>Mrs. Divya Rani Singh | Latest Concept in Relation to Lactating Mothers & Infant Health | 18 |
| 11. | डा० (श्रीमती) शक्ति सिंह एवं श्रीमती नीलम वैश्य | बच्चों में कुपोषण कारण तथा निवारण | 19 |
| 12. | कु० स्वाति श्रीवास्तव | लिंग भेद एवं महिला सशक्तीकरण | 20 |
| 13. | श्रीमती सरिता त्रिपाठी | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लिंग भेद व महिला सशक्तीकरण | 21 |
| 14. | डॉ० अर्चना तिवारी | खाद्य असुरक्षा, भूख और ग्रामीण महिलाओं की स्थिति | 23 |
| 15. | *उदिता मणि त्रिपाठी* | ग्रामीण क्षेत्रों में महिला कुपोषण की समस्या | 24 |
| 16. | Joydip Chakraborty<br>Dr. A.R.Chandraker | Dietary Habits & Nutritional Status of the People of Village mungeli | 26 |
| 17. | Uzama Parveen | Women and Child Care :A Case study of Aligarh City | 26 |
| 18. | Saba Anjum | Women : An integral yet ignored part of the society | 27 |
| 19. | डॉ० कुमकुम रानी श्रीवास्तव | स्वरोजगार एवं महिला सशक्तीकरण | 27 |
| 20. | संतोष कुमार यादव<br>शीतल कुमार बंछोर एवं टिके सिंह | ग्रामीण छत्तीसगढ़ में शिशु मर्त्यता रायपुर जनपद का प्रतीक अध्ययन | 28 |
| 21. | Dr. B.P. Agrawal & Dr.S.S. Katare | THE BAIGA UPLIFT | 29 |
| 22. | सीता पाण्डेय | भारतीय जनजातियों का बदलता परिदृश्य | 30 |
| 23. | आस्था प्रकाश | ग्रामीण विकास में विभिन्न शैक्षिक स्तर की छात्राओं की भूमिका | 31 |
| 24. | डॉ० लाल चन्द्र यादव | आधुनिकीकरण के आड़ में बदलते जीवन मूल्य | 32 |
| 25. | डॉ० तुलसीदास पासवान | भू स्वामित्व एवं मानवाधिकार | 33 |
| 26. | Dr. M.N. Nigam | Social Climate And Planning In Rural Areas | 34 |
| 27. | डा० लोकेश श्रीवास्तव | मध्य प्रदेश की जनजातीय जनसंख्या, संरचना विकास की समस्यायें एवं निदान | 35 |
| 28. | डॉ० विजय कुमार तिवारी | अनुसूचित जनजातियों के श्रमिकों का मौसमी प्रवास | 35 |


Scanned with OKEN Scanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| | महेन्द्र कुमार दुबे | ग्रामीण बच्चों की दशा-दिशा | |
| 29. | हरिशचन्द्र मिश्र, डॉ० शिवाकान्त सिंह | प्रतापगढ़ तहसील में ग्रामीण जनसंख्या गत्यात्मकता | 36 |
| 30. | डॉ० (श्रीमती) रेखा तिवारी | मालवा प्रदेश (म०प्र०) में जनसंख्या वृद्धि का प्रतिरूप एवं प्रभाव | 38 |
| 31. | अनूप राय | भारत में जनजातीय जनसंख्या की संरचना एवं विकास | 39 |
| 32. | डॉ० लोकेश श्रीवास्तव | आधुनिकीकरण और ग्रामीण भारतीय संस्औति का बदलता स्वरूप | 40 |
| 33. | डॉ० भारत भूषणृ | बैगा जनजाति का बदलता सांस्कृति परिवेश | 41 |
| 34. | डॉ० लोकेश श्रीवास्तव<br>कु० ऋतु रानी प्रजापति | | 42 |
| 35. | प्रो० यशवंत गोविंद जोशी | भारत के मध्यवर्तीय जनजाति क्षेत्र में आदिवासी विकास की समस्याएं एवं चुनौतियाँ | 43 |
| | | **शिल्प विज्ञानी भारत का प्रतिरूप** | |
| 36. | Smt. Hani Misra<br>Dr. Sangeeta Chauahan | Biotechnology and Agriculture | 45 |
| 37. | राजेन्द्र कुमार सिंह | प्रकृति का वरदान 'बायोडीजल | 46 |
| 38. | सुभाष कुमार | खाद्यान्नों में घुलता जहर : जैव कृषि | 48 |
| 39. | Dr. Indra Deo Pandey | Present Status and Future Prospects of Biotechnology in Agriculture | 49 |
| 40. | Dr. Swarn Lata | Biotechnology and Animals | 50 |
| 41. | Indrajeet Debnath | SMALL SCALE COTTON INDUSTRY A CASE STUDY OF NADIA DISTRICT (W.B.) | 51 |
| 42. | Dr. Shiv Kumar Vernwal | Chemical Aspects of Mustard Grain | 52 |
| 43. | Dr.Hari Ram Yadav | Implication OF Bio-Technology IN Rural India | 53 |
| 44. | Dr. D.D.MAITHANI | ENERGY RESOURCES FOR SUSTAINABLE RURAL DEVELOPMENT IN GAHAWAL HIMALAYA | 54 |
| 45. | डॉ० चन्द्र प्रकाश सिंह<br>डॉ० मनोज कुमार सिंह | ग्रामीण भारत में शाश्वत ऊर्जा का प्रतिरूप एवं सम्भावनाएं | 54 |
| 46. | डॉ. विजय कुमार चौधरी<br>डॉ. प्रदीप कुमार राव | ग्रामीण भारत में शाश्वत ऊर्जा के प्रतिरूप एवं सम्भावनाएँ | 55 |
| 47. | डॉ० प्रेम प्रकाश राजपूत | ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा उपयोग का बदलता परिदृश्य | 56 |
| 48. | प्रमोद कुमार | ग्रामीण भारत में शाश्वत ऊर्जा के प्रतिरूप एवं सम्भावनाएं | 57 |
| 49. | Dr. S.K. Singh | "Watershed Development Approach for Sustainable Rural Development" | 58 |
| 50. | Anita Singh, D.K. Kuity<br>Likesh Kumar Nayak | Coal Mining and Its Impact on Chharla Village District Jharsuguda, Orissa. | 59 |
| 51. | B.B.L. Sharma | Sustainability of Arid Ecosystem in western Rajasthan Problem indntification, management and peoples participation | 60 |
| 52. | डॉ० चन्द्रशेखर सिंह | पर्यावरणीय प्रदूषण : एक भौगोलिक सिंहावलोकन | 62 |
| 53. | SatyaPal Singh | How To Overcome the Energy Crisis in the Perspective of the Rural Development Of India | 62 |
| 54. | Kunal Gaurav | Future of Rural India : from marketer's point of View | 63 |
| 55. | Dr. A.Sengupta,<br>Dr. N. K. Bakhshi<br>J.P.Yadav | Rural Consumers Behaviour In the Fringe Areas of Gorakhpur City | 64 |
| 56. | डॉ० चन्द्रकान्त चौबे | | |
| 57. | चन्द्र मिलन वर्मा | भारत में बेरोजारी की समस्या-एक पुनरावलोकन | 65 |
| 58. | डॉ० कौस्तुभ नारायण मिश्र | ग्रामीण जन प्रव्रजन | 66 |
| | | ग्रामीण विकास और भूदैन्यासिक संगठन | 66 |


Scanned with OKEN Scanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 59. | डा० अनिल कुमार गुप्त | ग्रामीण विपणन केन्द्र और नवाचारों का प्रसार | 67 |
| 60. | डॉ० पी.आर.चौहानए कमलेश कुमार मौर्य | भारत में नगरीकरण का ग्रामीण क्षेत्रों पर प्रभाव | 68 |
| 61. | सुधीर कुमार मिश्र | भूमि उपयोग प्रतिरुप एवं ग्रामीण अर्थतन्त्र का नियोजन | 68 |
| 62. | डॉ० दुर्गा प्रसाद यादव | नगर उपान्त क्षेत्र के नियोजन की आवश्यकता | 69 |
| 63. | यदुनन्दन प्रसाद, राजेश कुमार आर्य | आजमगढ़ जनपद में आवर्ती विपणन केन्द्र एवं कृषि विकास | 70 |
| 64. | डॉ० नरेन्द्र कुमार शर्मा<br>डॉ० हरिन्द्र यादव | ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास | 71 |
| | | **अनुप्राणित भारत-प्रक्रिया एवं प्रतिरूप** | |
| 65. | डॉ०संजीत कुमार गुप्ता | ग्रामीण जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी | 72 |
| 66. | डॉ० प्रदीप कुमार राव<br>डॉ० विजय कुमार चौधरी | सूचना विस्फोट एवं ग्रामीण जीवन पद्धति | 73 |
| 67. | डॉ० नीति शर्मा | नवाचार प्रसरण एवं ग्रामीण विकास | 74 |
| 68. | डॉ० कैलाश नाथ तिवारी | विपणन स्थल की आकारिकी परिवहन मार्ग एवं केन्द्रस्थलीय क्रिया-कलाप एवं गाजीपुर जनपद के ग्रामीण संदर्भ में | 74 |
| 69. | डॉ. मनोज कुमार सिंह | सूचना विस्फोट एवं ग्रामीण जीवन पद्धति के बदलते प्रतिरूप | 75 |
| 70. | Dr. R.A. Prasad, Dr. Anil Pal | Remote Sensing and Geographicla Information System Application in Drought Assessment | 76 |
| 71. | Dr. Rekha Devi | Role of Rural Credit in Rural Development | 77 |
| 72. | Dr. Mrs Mukul Mukherjee | Role of Home Science Education in Rural Development | 78 |
| 73. | डा०धनंजय सिंह, डा० महातम प्रसाद | पूर्वी उत्तर-प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार एवं प्रभाव | 79 |
| 74. | बृजेश कुमार सिंह | पंचायती राज्य व्यवस्था में जन भागीदारी | 80 |
| 75. | सीता पाण्डेय | ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति और पंचायती राज व्यवस्था | 81 |
| 76. | आशुतोष कुमार सिंह | पंचायती राज व्यवस्था में जन-भागीदारी | 83 |
| 77. | Dr. Ratnesh Kumar Pandey | Common Civil Code is Indispensable for the Unity and Progress of India | 84 |
| 78. | दिवाकर सिंह | पंचायती राज व्यवस्था में जन भागीदारी और ग्रामीण विकास | 85 |
| 79. | सुकचन्द नेताम, दुर्गापद कुइति | पंचायती राज व्यवस्था में जन भागीदारी | 86 |
| 80. | राजेश कुमार पटेल | पंचायती राज व्यवस्था में जन-भागीदारी | 87 |
| 81. | प्रो०एस०के० दीक्षित | भारत में राष्ट्र-राज्य की अवधारणा का पुनरीक्षण | 88 |
| 82. | डॉ० अर्चना शुक्ला | राष्ट्रीय विकास में पंचायती राज व्यवस्था और जन सहभागिता | 89 |
| 83. | प्रो० वी० के० श्रीवास्तव | जैव संस्कृति एवं ग्रामीण विकास | 90 |
| 84. | Rishishwar Mani Tripathi | Integrated Plant Nutrient Management And Green Revolution | 90 |
| | | **जैव-विविधता एवं ग्रामीण भारत** | |
| 85. | डॉ०एम०एल०गुप्त | ग्रामीण भारत में औषधीय वृक्षों एवं वनस्पतियों की उपयोगिता तथा महत्व | 92 |
| 86. | Chhamta Srivastava | DIVERSITY OF MEDICINAL MONOCOTS OF EASTERN UTTAR PRADESH | 92 |
| 87. | Chhaya Pandey | Traditional Medicinal Plant Therapy Used For Skin Care by | 93 |
| 88. | Pratibha Singh, Kshama Tripathi | Organic Farming A New Vista in Agriculture | 93 |
| 89. | शंकरलाल दुर्गापद कुइति | रायपुर शहर के तालाबों का अस्तित्व | 94 |
| 90. | पुष्पेन्द्र कुमार सिंह | कृषि पद्धतियाँ एवं जैव विविधता | 95 |
| 91. | डॉ० एस० पी० एल० श्रीवास्तव | कृषि उत्पादकता का स्थानिक प्रतिरूप- एक प्रतीक अध्ययन | 96 |
| 92. | डॉ० नीति शर्मा, डॉ० शीराज़ अ० वजीह | बाढ़ समस्या एवं अनुकूलन नीति | 96 |
| 93. | Dr.Md Minhajul Hoda | Present Status of Indian Agricultural Marketing and its effects on Rural Transformation: A Case Study | 97 |
| 94. | Prof. Noor Mohammad | Future Trends In Indian Agriculture | 98 |
| 95. | Dr. Mhaske P.H. | AGRICULTURAL MARKETING DEVELOPMENT | 100 |


Scanned with OKEN Scanner

| | | | |
|---|---|---|---|
| 96. | Dr. Umesh Chandra Mishra | Impact of Technology on Agruculture | 101 |
| 97. | Dr. N.K. De | Land And Land Management In Rural India | 101 |
| 98. | प्रो० एस. सी. त्रिपाठी | भारतीय चिन्तन एवं पर्यावरण | 102 |
| 99. | Zeba Siddiqui | Regulated Markets and Rural Transformation | 103 |
| 100. | Dr. Ajit Kumar Bera | Contaminated Groundwater and Health Hazards in Rural Areas of West Bengal | 103 |
| 101. | डॉ० अशोक कुमार जायसवाल | वृष्टिछाया प्रदेश में धान की कृषि के विशेष सन्दर्भ में जैव-विविधता | 104 |
| 102. | Kaneez Zaman | Pattern of Agricultural Productivity in Ganga-yamuna Doad | 105 |
| 103. | Dr.Nizamuddin Khan | Socio-Economic Behaviour of Marketing of Vegetables, Aligarh District | 106 |
| 104. | Dr.S.Chattopadhyay | Land Evaluation Methodological issue in the Development of Rural India A case study | 107 |
| 105. | Luban Khalil | Pattern of Crop Productivity in Aligarh District | 108 |
| 106. | Dr. Umesh Chandra Mishra | Impact of Technology on Agruculture A case study of Deoria | 108 |
| 107. | Prof. R.K. Rai | Shifting Cultivation and its impact on Environment in Meghalaya | 109 |
| 108. | Ms.Rukhsana | FOODGRAIN AVAILABILITY AND FOOD SECURITY | 109 |
| 109. | Dr. Niranjan Dash | The Marketing Mechanis and Pricing of Farm Produce in Rural India | 110 |
| 110. | Khundrakpam Moirangleima | DEGRADATION OF THE WETLAND ECOSYSTEM | 111 |
| 111. | Dr. Pratibha Singh | Organic Farming-A New Vista in Agriculture | 112 |
| 112. | A.K.Srivastava Jr<br>S.N. Lal | Management and Conservation of Biodiversuty of Gorakhpur | 112 |
| 113. | डॉ० अविनाश कुमार सिंह | पंचायती राज व्यवस्था में जन सहभागिता | 113 |
| 114. | सुनील कुमार प्रसाद | छत्तीसगढ़ राज्य के धमतरी जिले में जल संसाधनों का भौगोलिक | 114 |
| 115. | Md. Akhtar Hasin ur Rahaman | The Role of Women in Sericlture and its Effects on | 115 |
| 116. | ASIF IQUBAL | Role of Women Labour in Animal | 116 |
| 117. | LIKESH KUMAR NAYAK | Grazing practices and Ecosystem | 117 |
| 118. | Snehlata Tripathi | Diversity Patterns and Association | 118 |
| 119. | नवीन कुमार मिश्र | जैव-विविधता एवं संरक्षण | 118 |
| | | **धर्मसार भारत का प्रादेशिक प्रतिरूप** | |
| 120. | डॉ० सुदीप्ता बी० भूषण | समाजिक समन्वयन एवं समरसता हेतु भारतीय कला-धर्म | 120 |
| 121. | डॉ० बलवान सिंह | धर्म-सामाजिक समन्वयन एवं समरसता | 121 |
| 122. | Dr. Reena Agarwal | Entrepreneurship in Rural India | 123 |
| 123. | Richa Srivastava<br>Dr. Niti Sharma | Population Characteristics of Arunachal Pradesh | 123 |
| 124. | Dr. Jugesh Pegu | Evolution of Tribal Market Centres of Mahabharat | 124 |
| 125. | Dr. Sheela Srivastava | Modernization of Rural India | 124 |
| 126. | Rudvik | Cell-Phone Technology and Rural Transformation A Survey | 125 |
| 127. | Prof. Prajna Shrivastava | Knowledge Management and Women in Powerment | 125 |
| 128. | डॉ. जी.एल. श्रीवास्तव<br>डॉ. ममता श्रीवास्तव | धार्मिक पर्यटन एवं ग्रामीण भारत का विकास | 126 |
| 129. | Prajna Shrivastava | Rural Retailing in India | 127 |
| 130. | डॉ० मुकुन्द शरण त्रिपाठी | प्राचीन भारत में दुर्गों की संकल्पना | 128 |
| 131. | डॉ. कृष्ण देव पाण्डेय | ग्रामीण विकास में बैंकों की भूमिका | 131 |
| 132. | डॉ. नीरज कुमार सिंह | ग्रामीण विकास में बैंकों की भूमिका | 132 |
| 133. | Dr. SANDEEP KUMAR | Poverty And Unemployment in Rural India | 133 |
| 134. | डॉ० चन्द्रकान्त चौबे | भारत में बेरोजारी की समस्या-एक पुनरावलोकन | 134 |
| 135. | Ajay Kumar Gandhi | Black Holes | 135 |


Scanned with OKEN Scanner

पथ प्रदर्शक-प्रपत्र

# Commmnicative Interactive Model for District Leval Rural Development Planning

**Prof. D.K. Singh**

Ex.Head, Geography, Utkal University, Bhubaneswar

There is an old saying in India, (applicable to gear pomposities results for effective rural develop-ent- with of course without ignoring minimum necessary rural-urban interaction) that :

" Dig at one place if you are thirsty; Water will be available to quench your thirst. Changing aces in the digging process will land you nowhere to get water."

Conflicting views are seen venerating in the concept of India's rural development planning osesses pertaining effective implementation.

Suitable planning machinery need to be established at the appropriate levels for *functional namism* involving *communication process through right kind of* participation and *information flow* hich would perhaps give the right directiontowards *sustainable, healthy* and balanced village group vel development planning and acceptable implementation.

While focussing rural development of a bunch of rural settlements we cannot ignore a reference block-level *vis-a-vis related district-level consideration.*

*Below the state level comes the consideration him of the districts before ew come down t the ock level implictins since a bunch of* gram Panchayats in ideal sense embrace their rural habitat t-ups with mutual give-and-take indirections.

Under the prevailing conditions in the Indian village-group scenario, we do find the action, inter-tion, governance and, above all, the nourishment aspect extended by *Panchyartraj institution, per-aps mostly providing congenial embrace to the desirable advance of development associated to the ral level social, economic and political conservatism.*

*Below the state level comes the consideration him of the districts before we come down to the vel implictins since a bunch of* gram Panchayuats *in ideal sense embrace their rural habitat set-ups th mtual give-and -take interactions.*

*Under the prevailing conditions in the Indian village-group scenario, we do find the action, inter-tion, governance and, above all, the nourishment aspect extended by* Panchyayatraj *institution, erhaps mostly providing congeniral embarace to the desirable advance of divelopment associated to e rural level social, economic and political conservatisms.*

*Proper handling of the Panchyatraj* activities providing education, awareness, communication nd imformations that are necessary with full coordination of Block level planning process *vis-a-vis* tegrated formulation of desired, balanced and operational dynamism for sustainable steps in devel-pment of brotherhood approaches of neighboring spatial habitual net of rural chain of happy scenario, at warrant a viable positivity of living conditions. A real need of the time is for empowering the rural ubs for desirable sustainable divelopment in full involvement and participation under minimum positive astructional requirements for peaceful livings.

Taking into consideration the above points in nutshell, the main conviction, i.e. *"the empower-*



Scanned with OKEN Scanner

ment of the people in rural environment" right from the grassroot spatial level to at least the block district level, an attempt is felt necessary to direct the attention towards peoples relevant and structive involvement. This is so because the prime concern in a social development approach is foundation of spatio-economic development plan endeaver. This brings in a "communicative Int tive Model" which is expected to laminate/minimize the views among the Various functional bod clusters of villages around

## INSTRUMENTS/TOOLS OF COMMUNICATIVE ACTS INDES FOR FIG. 5.3.

PDS.....Public Distribution System
F.....Village Fairs
Ex.....Exhibitiones
WM.....Weekley Markets
GM.....Group Meetings
SP.....Street Performances
NGO.....Non-Govt. Organizations
Go.....Govt. Organizational
MO
TT.....Mobile Orientation Training Teams
(Voluntary Well-trained Motivation innovative Organizations)
WSG.....Women-welfare Social Groups
YA.....Youth Association
SHG.....Self-Help Groups
EG.....Envieonment / Ecology Grurps
SO.
ED. .....Social Education Organization (Govt.)
HC. .....Health Care (Primary Health Centres) (Govt.)
VLW.....Village Level workers (Govt.)
EXTN.
SERV. .....Extension Services (Govt.)
ICDS.....Integrated Child Development Schemes
(Govt.). Also books after Child-Bearing Women.
PO.....Panchayat (Village Council) Office Workshops (Govt.)
BC.....Broadcasting (Radio/ TV etc.) (Govt.)
PW.....Panchayat (Village Council) Workshops (Govt.)
DDS.....Dance/ Drama/ Shows (Govt. For Motivation)

Systems of Micro & Macro Spaces :

1= Village Locality Level (Micro Space)
2= Block (Sub-List.) Panchayat Union Level (Micro Space)
3= District Level (Micro & Macro Spaces)
4= State (Province Level), (Macro Spaces)
5= Nation (Centre) Level, (Macro Spaces)

Scanned with OKEN Scanner

# From Geo-Marketing to Bio-Marketing: Some Refelections

Prof. V.K. Shrivastava
*Emeritus Fellow*

In depicting the mirror images of the random attempts made by me to study geography of marketing through various perspectives I am in a way trying to know about my-self as a student of the theme in question. This appears to me significant because it is knowledge alone which enables man to know himself.

Marketing geography is concerned with the spatial variation in exchange activities of many, the inter-relations between aspects of natural environment and human endeavor to modify it and to identify the appropriate spatial segments consequent upon such inter-relation. The exchange activity among human beings is an age-old phenomenon. The theme of geography of marketing is however, in modern sense, relevant since about the early eighteenth century. Leaving the historicity of the subject and believing the prevalent notion I would like to pay more emphasis to the dynamism of geography of marketing over the last about 200 years. The utilization of natural and human resources through the systems of exchange vis-a-vis marketing has shaped the destiny of man. The focus of debate is this resource-man relationship and its changing and challenging equation that calls for a deliberation of this nature. It is not a commentary on the game one has been playing since over three decades. It is supposed to be, on the other hand, a thoughtful reflection on the past and professed future of the theme in question . The aim of such presentation is to examine the possibility of deriving some generalizations that may lead to theoretical structuring.

It is also to be remembered that geography of marketing is basically a field-based science. Following an African proverb it believes that ' knowledge is a garden. If is now cultivated, it cannot be harvested'.

Markets are the mirrors of prevailing culture of the spatio-temporal domain encompassed by them. Exchange of goods, services, ideas, technology, information , cultural traits and even spritual insight contributes towards the mutual interdependence and integration of the society in general. A system of exchange that is in harmony with sustaining the spirit of nature and preserving the moral fiber of humanity may become the backbone of survival of the earth that is the home of man. Friends, with an agenda of this nature allow me to reflect on what is known to you more that to me, i.e. the transformation of geography of marketing from the science and art of cheating to the competence of understanding that the chain of life must be preserved at all costs, for once it is broken , the wheel of nature may stop turning.

The transformation from Geo-Marketing to Bio-Marketing has been organized around the following themes-

a. Traditional Stage
b. Transitional Stage
c. Modern Stage
d. Futuristic Stage



Scanned with OKEN Scanner

**Traditional Stage:**

It would be adventurous to speculate the period when the process of exchange was set in action by human beings. Exchange process reflected man's initial view of space and its changing dimensions. Mutual exchange of gifts, and ideas was initiated with the advancement of culture among families, groups and societies. Carbon dating has not been possible. It may be however, observed that the term' marketing' in contemporary world might have been coined with inter-society exchange of goods and services. The domain of the society may form region and the proceeds of exchange on either side might have taken any form self-contentment to monetary gains. Thus the assembly of two basic components of geography of marketing, i.e. the region and the productive process is achieved. The christening of the term geo-marketing means the inherent relation between man and nature wherein the former transforms the nature according to ones own need, capacity and motivation and in doing so substances, skills, ideas and knowledge are made to move from region to region and from society to society. The term 'geo' refers to the basic resources of nature and 'marketing' refers to the transformation and utilization of the substances in question by human beings.

The traditional marketing involved families, farms, forests, pastures, fairs, markets, rituals and the like. In the traditional process of exchange religion, customs and conventions played a significant role. The material of exchange and related bits and pieces were generally obtained from the nature directly with a little or more dressing to go well with the need of the demanding party. Self-sufficiency was the trademark of life style of people. The affluence or expertise in a particular craft could surpass regional limits. Horizontal exchange could meet most wants of population. An example of trading in silk in China in the early 15$^{th}$ century shows that the 'core good' (silk in this case) and the associated craft assume significance (Plate). The trade is bound by locality reflecting regional character of the produce and it generates linkages from intra-regional to international levels. The locus of traditional trade was shop or workshop or small market or hat.

A noteworthy feature of traditional marketing was the evolution and functioning of periodic markets. The availability of the nodes of exchange was oriented according to the needs of population. Not all people needed markets all the time, not all places provided goods and service all the time and not all traders could be present at desired market sites all the time. The people-commodity and itinerant traders' triangular combination resulted in periodic market places. Periodic markets provide manor links among the three players. These marketing nodes could serve the needs from a score of participants to thousands of market place participants with intense exchange participants to thousands of market place participants with intense exchange activity within a short span of the day. The period of functioning ranges from morning to day and afternoon meetings, evening streets and night markets. These nodes could be noted in rural and urban areas both and could sustain themselves in competitive environs of metropolitan markets as well. The relation with nature as exemplified in the goods and services disposed of is more gracious, responsive and sociable. The nature of trade was predetermined and face-to-face exchange was the rule.

**The Advent of Money & Geo-Marketing:**

With the growth of population and advancement of human civilization man environment interrelation developed into a more forceful management of resource utilization and intake. The scale of man-environment interaction outstripped national limits. Not all people could be producers or traders, though



Scanned with OKEN Scanner

all of them needed goods and services for their sustenance. This called for a new medium of exchange. Barter was replaced with a value-loaded touchstone. Thus came the induction of money in the process of exchange. It may be noted that money arose not to circumvent barter but due to cultural forces. It was a social discovery. The following forms of money emerged in chain-

Bride Money
Ornamental Money
Ceremonial Money
Religious Money
Political Money
Commodity Money
Credit Money etc.

Money turned out to be the new medium of exchange. Geo-marketing intensified and vertical exchange of goods and services at inter-regional scale was initiated.

The forms of money were as varied as the character of people. For example 'cowry shells' were used as money in many parts of Asia and Africa (Plate). The count of animals one had decided the designation and status in the peasant societies. The system of bankers was customary in late eighteenth and early nineteenth centuries (Plate).

**b. Transitional Stage :**

The evolution of exchange process witnessed a reformation. Population increased and led to larger farm production resulting in agri-business. The spatial context assumed significance than regional dimension. Distance minimization directed market location and demand fulfillment dictated consumer behavior. The practice of resource use intensified and pressurized the resources much more than ever before. Agro-processing added to the variety of goods and services and called for greater utilization of natural resources folowing agri-business. Knowledge of production craft and consumption needs became more apparent. Endogenic changes in retailing emerged. The central place system emerged on the principles of geographical uniformity. Local self-sufficinecy disappeared and the magnitude of information level assumed importance. The number of players in the distribution changed. From 'face-to-face'exchange process emerged the intermediary, seller, primary trader and moneylender Plate. Moneylander appeared on the rural scene helping the producers, traders and self. Periodicity enhanced (both spatially and temporally) to attain greater threshold values. Public intervention was witnessed with government appearing as an additional player in public interest. The Public Distribution System was introduced both for purchase and distribution of specific goods. Wholesaling and retailing both dominated the business scene.

In order to meet the varied growing demand external trade appeared. It necessitated an agent of trade that was neither a producer nor a consumer. Consumers and producers both desired information on surplus production. It was either the push of abondance or the pull of scarcity that directed external trade mechanism. Retailing and wholesaling methods of trade appeared. The central place system and the open system of trade mutually supplemented each other (Plate). This resulted in external shaping of local conditions and lead to exogenic changes. The mechanism of organization was steered by gravitation of business interest on a place and called for derivative theoretical structure based on observation, experience and history. Inter-continental trade flourished in midnineteenth cen-



Scanned with OKEN Scanner

tury (Plate) that comprised of exchange of goods, services, culture and traditions.

Geo-Marketing further pounded nature with intensified demand that may have no regional rationale. The world witnessed a race for exploiting and utilization of resources. The amounts of consumption became the hallmark of one's prestige whether of an individual or of a nation. The life style demanded more consumption and stirred up the modes of production and trade.

**c. Modern Stage:**

It is difficult to difficult to define what is modern and what is not. Taking general notion modernity may be defined through the levels of technology and information. Starting from the traditional modes of exchange through catalogue shopping, tele-shopping, mail order, sky shopping, mobile shopping the marketing technology seems to be making is naturally integrated with the ecological complex of the area concerned. The ecological complex plate comprises of four interrelated clusters of variables namely.

Population
Technology
Organization
Environment

Market organization becomes a sub-cluster of variables that may induce circular and cumulative changes in the independent variables cited above. This in turn prompts alterations in spatio-temporal, functional, social and cultural character and on the nature and amount of resources, both natural and human. The quality of environment vis-a-vis quality of life in core and peripheral areas of markets becomes a reflection of the touch of marketing technology and level of information. The ecological processes of inter-dependence, adaptation and chain reaction have conceptual parallels in marketing geography, Geo-marketing is transforming towards bio-marketing, i.e. bringing bio-considerations before the sky rise of exchange process.

Functional advantages of innovative high-tech capability cannot and should not be denied. The resultant behavioral, environmental and political changes shape the future of the generations to come. The facade of sustainability deserves foremost attention of planners, academicians, politicians, thinkers and activists. Thinking on global terms becomes necessary. It has been noted that the global interrelation has resulted in delirious consequences to the environment of social and productive forces. Biotechnology, re-productive technology and optimum population concepts are seen in a perspective of distrust. The concept of biopolitics has emerged to take intio account the future of geo-marketing and the future of the society based on exchange process.

**e. Futristic Stage:**

The futuristic trends in geography of marketing are apparent. Like other human activities the forces shaping growth and geographical change in the new millennium are also influencing marketing. There are four such main forces

i. Tertiarization
ii. Informationalization
iii. Locational Disarticulation
iv. Constant Innovation

Tertiarization is a reflection of geography of marketing though an emphasis on services and



Scanned with OKEN Scanner

distribution. The increasing use of information has become the basis of the economy. Locational disarticulation of production centers is the result of command-and-control functions being in different than production places. The generation and exchange of information is related to constant innovations. The commodities, needs and desires of man have multiplied with a growing awareness about the sustanabiluily of life on the earth. The global environment is fostering the growth of mega cities in the developing world. These demographic giants are functioning as new global-command centers of similar cities in the world. They are transport-telecommunication hubs and tourist Mecca. The four main functions performed by them are-Trans National Corporation location for investments, key locations for finance and services, sites of production and innovation and markets for products. It is the last of the functions that is of concern to this talk. Food is the basic need of man. Under this system Grassroots Agri-business Corporations for agriculturists and agrilabours are being formed (plage). Micro-entrepreneurships being promoted to let the poor contribute to production and earn their living on self-employment basis and let them establish verticil linkages with TNCs.

Gradually an ecologically induced model of development of market systems has supplemented the eco-complex model. Under this system the concept of habitat-work place and market ecology have been accounted for. An integrated model for market development incorporating ethics and values in over all market behaviour has been actively stimulated.(Plate).

The present day society in this meta-industrial ear is under going a crisis of values. Bio-ethical dimensions are needed for the existence and development of humanity. It is here that the role of bio-marketing becomes prominent. The contribution of economic factors is a prerequisite to promote ethical values of bios. New alternatives lead to new opportunities in business. In this context Eco-marketing calls for a redefinition of the concept of profit. The concept of profit incorporates added dimensions of protecting the bio-environment, preserving resources and improving the quality of life. Religion teaches that spiritual bonds connect all human beings. They are all inter-dependent and interrelated. Eco-marketing underlines the need to integrate exchange activity with the concept of saving and energizing the bios. The unifying perceptions between science and religion, environment, bios and exchange activities are to be identified and practiced. Human creativity needs to be channeled towards an inspired and productive renaissance. Technology and the arts coupled with a sound system of values provide ample avenues for growth and can lead to the blossoming of the human spirit. Societal values may direct the transformation of present society to future society (Plate).

The model of life Field of Marketing Geography may help in understanding and in applying the concept of bio marketing (Plate).

Scanned with OKEN Scanner

# जातीय एवं प्रजातीय भारत का प्रतिरूप

# Pattern of Castes & Tribes in India

Scanned with OKEN Scanner

# I-1 जनपद जौनपुर (उ०प्र०) में जनसंख्या वितरण प्रतिरूप

अनुपमा दीक्षित
शोध छात्रा, वीर बहादुर सिंह, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

जनपद जौनपुर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में स्थित प्राचीन ऐतिहासिक जनपदो में से एक है। यह जनपद वाराणसी मण्डल के उत्तरी भाग में स्थित अपना एक विशिष्ट, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनैतिक अस्तित्व रखता हैं। इस जनपद का विस्तार 25° से 26° उत्तरी अंक्षाश तथा 82° से 83° 5' पूर्वी देशान्तर के मध्य समुद्र की सतह से औसतन 82 मीटर की ऊचाँई पर बसा हुआ है। जनपद की लम्बाई, पश्चिम से पूर्व लगभग 90 किलोमीटर तथा चौड़ाई उत्तर से दक्षिण लगभग 85 किलोमीटर हैं। इसके उत्तर पश्चिम में सुल्तानपुर,पश्चिम में प्रतापगढ़, दक्षिण-पश्चिम में इलाहाबाद, दक्षिण में वाराणसी, पूरब में गाजीपुर तथा उत्तर पूरब में आजमगढ़ जनपद स्थित है। जनपद का क्षेत्रफल लगभग 4040 वर्ग किलोमीटर हैं, जो प्रदेश के क्षेत्रफल का लगभग 1.4 प्रतिशत है। जनपद का आकार सामान्यतः त्रिभुजाकार है। जनपद की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। छोटी जोत, बढ़ती हुयी जनसंख्या और उद्योगों के अभाव के कारण यह जनपद उत्तर प्रदेश राज्य के आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए जनपदो में से एक है।

इस जनपद में कुल 6 तहसीलें, 20 विकास खण्ड, 218 न्याय पंचायतें, 2052 ग्राम सभाएँ एवं 3391 आवासीय ग्रामों की संख्या है। जनपद जौनपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश एक सघन जनसंख्या वाला भाग है। इसमें गोमती एवं उसकी सहायक नदियाँ पीली, सई, बसुई, बरना आदि प्रवाहित होती है। यह मध्य गंगा मैदान का एक उपजाऊ भाग है। जो कृषि उत्पादन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। वर्ष 2001 के अनुसार इस जनपद का औसत जनसंख्या घनत्व 969 प्रति वर्ग किलोमीटर है जो अपने पासवर्ती जनपदों सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, आजमगढ़ एवं गाजीपुर की अपेक्षा अधिक है।

जनपद में जनसंख्या वितरण का अध्ययन विकास•खण्ड को आधार मानकर किया गया है। ध्यातव्य है कि यहाँ वर्तमान समय में कुल 21 विकासखण्ड है। सबसे न्यून जनसंख्या घनत्व सुइथाकलॉ विकास खण्ड में 809 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है जबकि सबसे अधिक घनत्व सिरकोनी विकास खण्ड में 1197 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। जन घनत्व के क्षेत्रीय वितरण को स्पष्ट करने के लिए इसे चार सम्वर्गो में विभाजित किया गया है। जिसमे न्यून जनघनत्व (900 से कम) 4 विकासखण्डों में यथा सुइथाकलॉ, महराजगंज, मुंगराबादशाहपुर एवं मछलीशहर में मिलता है। मध्यम घनत्व 901 से 1000 के अन्तर्गत 7 विकासखण्ड यथा शाहगंज, खुटहन, बदलापुर, सुजानगंज, मड़ियॉहू , बरसठी एवं मुक्तीगंज सम्मिलित है। उच्च घनत्व (1001 से 1100) के अन्तर्गत 9 विकासखण्ड यथा करजाकलां, सीकरारा, धर्मापुर, रामनगर, रामपुर, जलालपुर, केराकत एवं डोभी विकासखण्ड सम्मलित है। अति उच्च घनत्व केवल सिरकोनी विकासखण्ड में पाया गया है। उक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि जनसंख्या घनत्व का क्षेत्रीय प्रतिरूप पूर्णतः भौगोलिक दशाओं के अनुरूप है। जनपद के उत्तरी एवं पश्चिमी अपेक्षाकृत कम उपजाऊ वाले भागों में न्यून जनसंख्या घनत्व, मध्यवर्ती व पूर्वी भाग में सामान्य घनत्व जबकि मध्यवर्ती दक्षिणी भाग में उच्च घनत्व मिलता है।

❐



Scanned with OKEN Scanner

# I-1 जनसंख्या विस्फोट जनित पारिस्थितिकी अवनयन एवं पर्यावरण प्रबंधन

डॉ० तारकेश्वर सिंह एवं डॉ० आनन्द सिंह
रीडर, भूगोल विभाग, श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महाविद्यालय डोभी, जौनपुर

जनसंख्या इस पृथ्वी की सर्वश्रेष्ठ एवं बहुमूल्य संसाधन है जिसकी ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रिया एवं तन्मात्राएं इतनी सक्रिय एवं विकसित हैं कि विश्व का कोई भी प्राणी इसके समकक्ष नहीं है। एतदर्थ मानव इस सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसे अन्य प्राणियों की तुलना में प्रखर बुद्धि एवं वाणी प्राप्त है इन दो गुणों के कारण उसने प्रकृति के समानान्तर एक अन्य सृष्टि का निर्माण कर लिया है जिसे सभ्यता एवं संस्कृति कहते है। जनसंख्या अपनी मात्रात्मक एवं गुणात्मक विशेषताओं के अनुसार किसी देश के लिए वरदान एवं अभिशाप दोनों है। समाज के कार्यरत जनसंख्या का अधिकतम प्रतिशत आर्थिक समृद्धि एवं उच्च समाजिक स्तर का परिचायक है जबकि निम्नतम प्रतिशत आर्थिक पिछड़ेपन का द्योतक है। विश्व में इसलिए कुछ देशों में सीमित संसाधन ही असीमित संसाधन के रूप में है, इसके विपरीत बहुत से देशों में इसकी अधिकता एक जटिल समस्या के रूप में है। जब किसी देश में जनसंख्या का उपयोग योजनाबद्ध एवं प्रभावकारी ढंग से किया जाता है तो वहां तीव्र आर्थिक विकास होता है। अतः क्षेत्र की सम्पन्नता का द्योतक है वहीं सघन, निरक्षर एवं कार्येतर जनसंख्या विपन्नता की जन्मदात्री है। जनसंख्या के तीव्र वृद्धि से भू-सांस्कृतिक संसाधनों की उपलब्धता में क्रमिक ह्रास हो रहा है, जीवन स्तर के उन्नयन हेतु पोषक तत्त्वों में कमी आती जा रही है। फलतः मानव-पर्यावरण अन्तर्सम्बन्धों में असंतुलन की स्थिति पैदा होती जा रही है।

तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या निश्चित तौर पर आज सम्पूर्ण विश्व की सबसे चिन्तनीय एवं ज्वलन्त समस्या बनी हुई है। जनसंख्या विस्फोट से मानव वरदान स्वरूप न होकर अभिशाप मण्डित बनता जा रहा है। प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता में ऋणात्मक झुकाव मानव संसाधन के स्तर में ऋणात्मक परिवर्तन करने की उद्घोषणा कर रहा है। जनसंख्या अतिरेक से बढ़ता अधिभार पार्थिव अखण्डता एवं एकता को विखण्डित कर रहा है। यही कारण है कि जनसंख्या द्वारा गये अतिशयता भरे क्रियाकलापों एवं अविवेकपूर्ण निर्णयों से सम्पूर्ण पर्यावरण की नींव हिल रही है तथा असंतुलन की स्थिति का प्रादुर्भाव हो रहा है। आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण प्रदूषण के दानवी पंजे से लहूलुहान एवं आक्रांत है जिसका जिम्मेदार यही मानव है भौतिक संसाधनों का किया गया विदोहन जनाधिक्य की देन है एवं पर्यावरण प्रदूषण संसाधन विदोहन प्रक्रिया के साथ-साथ मानव द्वारा विसर्जित अपशिष्ट पदार्थों के विषाक्त पुंज का प्रतिफल है। मानव-पर्यावरण के इस विषैले अन्तर्सम्बन्ध के बीच सांस लेने वाले आधुनिक मानव को जहाँ जनसंख्या विस्फोट की स्थितियों को वैज्ञानिक अध्ययन करना अनिवार्य हैं वहीं पर्यावरण की सुरक्षा का व्रत भी उसे लेना है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध-प्रपत्र में पर्यावरण द्वारा जनसंख्या विस्फोट एवं पर्यावरण के बीच तारतम्य स्थापित करने का प्रयास करना है।

आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरणीय समस्याओं से आक्रांत है। मानव एवं पर्यावरण का अटूट रिश्ता है लेकिन समय के साथ-साथ उसके अन्तर्सम्बन्धों में परिवर्तन भी होता है। जैविक विकास की प्रक्रिया में मानव अपने उच्च विकसित मस्तिष्क, निपुण हाथों एवं पर्यावरण को अपने अनुरूप ढालने की क्षमता के कारण ही पारिस्थितिकी तन्त्र के शिखर परस्थित है। मानव पर्यावरण का अंग होने के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण कारक भी है। आदिम मानव से प्राविधिज्ञ मानव (सुसंस्कृत मानव) की यात्रा में एक तरफ वह प्रगति के नित नये सोपानों की ओर अग्रसर है तो दूसरी तरफ अनेक



Scanned with OKEN Scanner

प्रकार की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं पर्यावरणीय समस्याओं का जन्मदाता भी है। विश्व के विभिनन भागों में प्राकृतिक-मानवीय भूदृश्यों का ह्रास भूमण्डलीय तापवृद्धि, स्वच्छ वायु की कमी, स्वच्छ जल का बढ़ता अभाव, बाढ़ एवं सूखे की बढ़ती बारंबारता, जीवनदायनी तत्वों में ह्रास, मिट्टी एवं वनों का ह्रास, जीव जन्तुओं का संहार एवं ह्रास, उनकी उत्पादनशीलता में ह्रास, खनिज एवं शक्ति संसाधनों का शोषण, सामाजिक-राजनैतिक तनाव एवं संत्रास, शारीरिक एवं मानसिक बीमारियाँ, ध्वनि प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, मरुभूमि प्रसार, ऊर्जा संकट, अनिवार्य कच्ची सामग्रियों का अभाव, धुआं एवं जहरीले औद्योगिक प्रदूषण, गैसों से भरा अधिवासी क्षेत्र, तेजाबी वर्षा, रेडियो एक्टिव तत्वों एवं कीटनाशकों का फैलता जहर, ग्रीन हाउस प्रभाव में वृद्धि, ओजोन परत क्षरण, मधुमेह, रक्तचाप, हृदय रोग, कैंसर, हीपेटाइटिस एवं एड्स जैसी जानलेवा बीमारियों का बढ़ता प्रकोप तथा जनसंख्या में हो रही असामान्य वृद्धि आदि समस्यायें एक सर्वव्यापी त्रासदी के रूप मे समूचे वायोम के मानवास्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाता हुआ सम्प्रति युग की असमाधेय चुनौती बन गया है। इस प्रकार आज के विकास युग में उपर्युक्त पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न होकर स्थानीय स्तर पर पारिस्थितिकी अवनयन को बढ़ावा दे रही है।

अतः अब वह प्रतीक्षित क्षण आ गया है कि अध्ययन क्षेत्र का सम्पूर्ण जनमानस पर्यावरण की सुरक्षा के महत्व को समझे एवं अपने क्रियाकलापों में विवेकपूर्ण परिवर्तन लाये। संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तरीकों से पर्यावरण के महत्व को क्षेत्र के लोगों को समझाकर जनजागृति लाना ही सम्प्रति मानव की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। सभी लोगों को वांछित पर्यावरण प्रदूषण के उपायों को अपनाना होगा। जनसंख्या विस्फोट पर रोक लगाना होगा। क्षेत्र के सभी घरों में गन्दी नालियों के सफाई, शौचालय, शुद्ध पेयजल, धूम्र रहित चुल्हों, ईट भट्ठे की ऊँची चिमनियों, विद्युत शवदाह गृहों, नियोजित पशु आवासों इत्यादि की व्यवस्था करनी होगी। साथ ही वृक्षारोपण पर विशेष ध्यान देना होगा। कृषि में रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशक दवाओं का प्रयोग बन्द करना होगा। वृक्षों की कटाई पर प्रतिबन्ध लगाना होगा तथा प्रकृति के निकट रह कर जीना होगा। साथ ही विकास की आँधी को रोकना होगा तथा प्रकृति के साथ सन्तुलन स्थापित करना होगा। हमें वर्तमान के क्षणिक सुख-सुविधाओं को त्यागकर चिर-स्थायी सुख-सुविधाओं एवं भावी पीढ़ियों के लिए ध्यान देना होगा। हम सभी को प्रकृति के नियमों के अनुसार चलना होगा। हमें ध्यान देना होगा कि कम से कम प्राकृतिक सम्पदा का दोहन हो। नदियों, अन्य जल स्रोतों, वायु मृदा, वनस्पति, ध्वनि, संचार, नैतिक आचरण, मन जैसे मुद्दों को प्रदूषण से बचाना होगा। मन की अपवित्रता ही मानसिक प्रदूषण है, जब हमारा मन स्वच्छ था तब यह धरती समस्या रहित सुख शान्तिमय स्वर्ग या सतयुग था लेकिन यही मन के आज प्रदूषित होने से वह अपना ही दुश्मन बन गया है। मानसिक प्रदूषण ने ही सतयुग को कलयुग में बदल दिया है अतः मानसिक प्रदूषण को रोकने के लिए वेद, उपनिषद, पुराण एवं आध्यात्म पर आधारित भारतीय संस्कृति को समाज में स्थापित करना होगा। वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को विश्व स्तर पर समाज में स्थापित करना होगा। विकास में स्थायित्व प्रदान करने में लिए विकास की आँधी को रोकना होगा। सादा जीवन उच्च विचार की अवधारणा को मानव समाज में स्थापित कर महात्मा गांधी के सपनों का भारत बनाना होगा, तभी हम विश्व के सामने आनन्दमय जीवन के विकास के लिए एक स्थायी स्वच्छ पर्यावरण की स्थापना कर प्रकृति के साथ मित्रवत् आचरण अपना सकते हैं तथा स्वच्छ पर्यावरण के दीर्घ लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं, अन्यथा इस धरती से बिना किसी विश्व युद्ध के ही प्रदूषण के कुप्रभाव एवं कुपरिणाम के फलस्वरूप सम्पूर्ण जीव जगत का अन्त अवश्यम्भावी है।

❐



Scanned with OKEN Scanner

# I-1 ग्रामीण शिक्षा के बदलते प्रतिरूप शिक्षा मित्र योजना

डॉ० शेष नारायण पाण्डेय, प्राध्यापक
श्री दुर्गेश्वरनाथ इण्टर कालेज, रूद्रपुर, देवरिया

ग्रामीण विकास को ध्यान में रखते हुए अशिक्षा एवं बेरोजगारी की समस्या से लड़ने के उद्देश्य से सरकार द्वारा 'शिक्षा मित्र' योजना चलाई गयी तथा उसे ग्राम पंचायत के अधीन रखा गया जिससे शिक्षकों के चयन भ्रष्टाचार को बढ़ावा ने मिले, प्रधान द्वारा योग्यतम व्यक्ति को इसका लाभ दिया जाय। सरकार द्वारा संचालित इस योजना को नौकर शाही से बचाने की भरपूर कोशिश की गयी। शिक्षक बन्धुओं की शिकायत थी कि उनके ऊपर शिक्षा के अलावा प्रशासन में सहयोग देना एक अतिरिक्त बोझ है। अभिभावकों का यह बहाना था कि शिक्षक पढ़ाते ही नहीं या उनके बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने दूर-दूर तक जाना पड़ता है क्योंकि उनके गाँव में विद्यालय ही नहीं है। इन सन्दर्भों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने शिक्षामित्र योजना का कार्यक्रम चलाया जिसमें गाँव के बेकार शिक्षित नौजवान गाँव में ही रहकर अस्थाई शिक्षक के तौर पर शिक्षा प्रदान करें। इनका चयन गाँव की शिक्षा समिति के अनुमोदन पर शिक्षा मंत्रालय द्वारा कराया जायेगा। समिति में प्रधान, प्रधानाध्यापक और गाँव के सदस्य होंगे। चूंकि सरकार सबके लिए भविष्य निधि की व्यवस्था कर सकने में सक्षम नहीं थी इसलिए इस योजना में शिक्षामित्र का पद अस्थाई रखा गया है। परन्तु मौजूदा परिवेश में शिक्षामित्र योजना अपने मूल उद्देश्यों से भटक गयी है।

स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा ही भारत में सर्वाधिक उपेक्षित विषय रहा। देश का शीर्ष नेतृत्व की नजरों में शिक्षा की पुनर्रचना के लिए कोई स्पष्ट चित्र ही नहीं रहा। शिक्षा से सम्बन्धित हर व्याख्या में मैकाले को कोसा गया। भारत में अंग्रेजों का प्रभुत्व सदा बना रहे ऐसी शिक्षा व्यवस्था की रचना करना उसका दायित्व था। शिक्षा के विकास के लिए विभिन्न आयोगों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ बनायी गयी। पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम आपरेशन ब्लैक बोर्ड, अनौपचारिक शिक्षा, नवोदय विद्यालय का संचनल, प्रौढ़ शिक्षा, सतत् शिक्षा, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन आदि योजनायें चलायी गयी लेकिन योजनायें पूर्ण सफलता को नहीं प्राप्त कर सकी। हमारे नीति निर्माताओं ने हमारी सामाजिक परम्परा तत्कालीन स्थिति और उपलब्ध संसाधनों की अवहेलना करके उन्नत राष्ट्रों की नकल कर योजनाये बनायी गयी तब निश्चित ही इसमें भ्रष्टाचार और असफलता का घुन लगना ही था।

Scanned with OKEN Scanner

I-1

# प्रबन्धन एवं सतत् विकास
# जनसंख्या, पर्यावरण एवं सामाजिक मुद्दे- एक दृष्टि

बी०सी० श्रीवास्तव
वनस्पति विज्ञान विभाग, हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी

1800 ई० तक विश्व की कुल जनसंख्या 1 अरब की जो वर्ष 2001 में बढ़कर लगभग 6 गुना हो गयी है। ऐसा अनुमान है कि यह संख्या वर्ष 2050 तक लगभग ग्यारह अरब तक हो जायेगी। आइये भारत की जनसंख्या की परिकल्पना की जाय तो यह देश वर्ष 2001 में विश्व का दूसरा अधिकतम जनसंख्या वाला देश था और यही वृद्धि दर बनी रही तो 2050 तक यह जनसंख्या एक अरब तिरसठ करोड़ हो जायेगी और भारत अधिकतम जनंसख्या वाला देश हो जायेगा।

जनसंख्या वृद्धि से पर्यावरण, प्रदूषण और सामाजिक असमानता भी उसी दर से बढ़ रही है, जिसमें मनुष्य के स्वास्थ्य एवं उसके सामाजिक-सांस्कृतिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। इस सन्दर्भ में यह आवश्यक है कि देश में शिक्षा का प्रचार प्रसार किया जाय जिससे सामाजिक बुराइयों से मुक्ति मिल सकें व मानव समाज का गुणात्मक विकास सम्भव हो।

❐

# मध्यसोन बेसिन में नगरीकरण का स्तर

डॉ० राम नयन राम
वरिष्ठ प्रवक्ता , भूगोल विभाग, महाविद्यालय छिबरा मऊ

प्रस्तुत प्रपत्र मध्य सोन बेसिन के नगरीकरण का अध्ययन उसके ग्रामीण क्षेत्रों पर पड़ने वाले प्रभाव के सन्दर्भ में किया गया है। ध्यातव्य है कि नगरीकरण को प्रक्रिया आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति को अनुगामी होती है। यह प्रक्रिया ग्रामीण अंधिवासों का नगर के रूप में हुए रूपान्तरण को एक समन्वित प्रक्रिया है जिसके फलस्वरूप ग्रामीण अधिष्ठानों व्यवसाय एवं अर्थव्यवस्था, भूमि उपयोग, समाज एवं संस्कृति, जीवन एवं रहन-सहन का स्तर और दूसरे मानव मूल्यों में क्रमशः गुणात्तम एवं मात्रात्मक परिवर्तन स्पष्ट होने लगता है। इस प्रकार नगरीकरण के स्तर का आकलन तहसील स्तर पर प्राप्त जनॉकिक ऑकड़ों के आधार पर किया गया है। आलोच्य प्रदेश के अन्तर्गत आने वाली 10 तहसीलों में से 9 तहसीलों में नगरीकरण का प्रभाव दृष्टव होता है। सामरी तहसील में पूर्णतः ग्रामीण जनसंख्या पाई जाती है।

मध्य सोन बेसिन का नगरीकरण का औसत 12.7 है। प्रदेश की मनेन्द्रगढ़ तहसील में 50 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय है। इसके बाद नगरीकरण के स्तर में एकाएक गिरावट आती है तथा दूसरा स्थान दुद्धी तहसील का है जहाँ पर 14.23 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय है। शेष सभी भागों में नगरीकरण बहुत कम है। नगरीकरण के इस स्तर के प्रभाव को ग्रामीण अधिष्ठानों के परिप्रेक्ष्य में विवेचित किया गया है।

$$\text{नगरीकरण का स्तर} = \frac{\text{नगरीय जनसंख्या}}{\text{कुल जनसंख्या}} \times 100$$

❐

# Regional Analysis of Female Employment Rate in West Bangal

**Md. Mustaquim and Enayat Ullah**
Research Scholar, Department of Geography, A.M.U., Aligarh

Employment in one of the most significant aspects of human population of a nation. It is an important indicator of the economic composition of region. The degree of employment or unemployment exerts its influences as one of the determinant of several socio-economic and demographic characteristics of the population. In India the employment rate has been changed from time to time due to changed in the definition of workers during different census years. Moreover the economic pattern of the country has also effect the employment rate.

West Bengal has been selected as a study area, where total female employment is 18.32% in 2001. In the state the female employment rete is lower than the national average in both rural and urban areas. The main discussion of the study is to examine the trends of female employment rete in the state since 1961 and it also attempts to identify the spatial variation of female employment rate in 2001. The whole discussionis entirely based on district level published data of relevant years obtained from census of India. For the analysis of data a simple percentage method has also been applied to find out a fruitful result.

It is observed that the female employment rate has increased from 6.43% in 1961 to 18.32% in 2001.The high female employment rates are found in the western part of the west plain region and southern part of the north plain region of the state, because aquacultural activities are dominant in these regions region and low rate of female employment is concentrated in south delta region of the state.

In case of rural areas this rate is high in north plain region and in the western part of the west plain region and relatively low in the south delta region of the state. In urban areas female employment rate is high in the northern part of south delta, region and low in western part of south delta region of the state.



Scanned with OKEN Scanner

# I-1 मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता

*प्रो० एम० एन० निगम*
निदेशक जनसंख्या एवं पर्यावरण अध्ययन संस्थान, अजमेर

ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता का प्रतिरूप (मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश) 2001

| क्र. | जनपद | कुल | पुरुष | महिला |
|---|---|---|---|---|
| 1. | खीरी | 45.97 | 57.74 | 32.17 |
| 2. | सीतापुर | 45.68 | 58.13 | 30.87 |
| 3. | हरदोई | 49.91 | 63.18 | 33.77 |
| 4. | लखनऊ | 53.86 | 65.18 | 33.77 |
| 5. | रायबरेली | 51.67 | 66.19 | 36.52 |
| 6. | उन्नाव | 51.94 | 64.49 | 37.87 |
| 7. | बाराबंकी | 45.90 | 56.86 | 32.19 |
| 8. | कानपुर देहात | 65.81 | 76.02 | 53.66 |
| 9. | कानपुर नगर | 65.66 | 75.15 | 54.49 |
| 10. | फतेहपुर | 54.59 | 67.90 | 39.53 |
| | **योग** | **51.44** | **63.87** | **37.23** |

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट है कि सन् 2001 में मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश की औसत ग्रामीण साक्षरता दर 51.4 थी जबकि सन् 2001 में इस क्षेत्र के उत्तरी भाग में ग्रामीण साक्षरता की दर अपेक्षाकृत कम थी। -यथा सीतापुर में 45.7, बाराबंकी में 45.9, खीरी में 46.0 हरदोई में 49.9 प्रतिशत ही थी। मध्यम ग्रामीण साक्षरता वाले जनपद अध्ययन क्षेत्र में मध्य एवं दक्षिणी भाग में मिलते हैं। ये जिले हैं रायबरेली, उन्नाव, लखनऊ तथा फतेहपुर। इनमें साक्षरता दरें क्रमशः 51.7, 51.9, 53.9 तथा 54.6 थीं।

उच्च साक्षरता वाले जिलों में ग्रामीण साक्षरता दर 61 से 70 प्रतिशत के मध्य रही। इनमें प्रमुख कानपुर नगर कानपुर देहात जनपद थे, जिनमें ग्रामीण साक्षरता दरें क्रमशः 65.7 तथा 65.8 थी।

### ग्रामीण पुरुष साक्षरता

उपरोक्त सारिणी से स्पष्ट है कि मध्य उत्तर प्रदेश में ग्रामीण पुरुष तथा ग्रामीण महिला साक्षरता दरों में भी पर्याप्त अन्तर था। सन् 2001 में मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश में ग्रामीण पुरुष साक्षरता दर 37.2 थी। स्पष्ट है कि ग्रामीण महिला साक्षरता दर ग्रामीण पुरुष साक्षरता दर की तुलना में काफी कम थी। उसका प्रमुख कारण यह है कि मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश के अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली महिलाओं का भारत के अधिकतर भागों की तरह समाज में निम्न एवं उपेक्षित स्तर है। ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार महिलाओं की शिक्षा के प्रति कम जागरूक रहते हैं। इसका दूसरा कारण गाँवों में फैली गरीबी है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की न्यून साक्षरता का प्रमुख कारण पारिवारिक उपेक्षा है। इस प्रदेश



Scanned with OKEN Scanner

के ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ आज भी शिक्षण सुविधाओं की अपर्याप्तता है, महिलाओं को ग्राम से बाहर शिक्षा के लिए भेजना भी नहीं के बराबर है।

सन् 2001 में मध्य उत्तर प्रदेश के अति उच्च ग्रामीण पुरुष साक्षरता दर रखने वाले जिलों में कानपुर देहात तथा कानपुर नगर थे, जिनमें ग्रामीण पुरुष साक्षरता दर क्रमशः 76.0 तथा 75.2 थी (चित्र २)। उक्त दोनों जनपदों में अति उच्च ग्रामीण पुरुष साक्षरता मिलने का सर्वप्रथम कारण कानपुर महानगर की निकटता है, जहाँ शिक्षा के अनेक संस्थान हैं। सन् 2001 में मध्यवर्ती ग्रामीण पुरुष साक्षरता रखने वाले जिलों में वे सम्मिलित हैं, जिनमें साक्षरता दरें 60 से 70 के मध्य मिलती हैं। सन् 2001 में इस वर्ग में मध्य उत्तर प्रदेश के हरदोई (63.2), उन्नाव (64.5), रायबरेली (66.2) तथा फतेहपुर (6709) सम्मिलित हैं।

मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश के खीरी, बाराबंकी तथा सीतापुर जिले ग्रामीण पुरुष साक्षरता की दृष्टि से निम्न साक्षरता दर वाले जिले हैं, जिनमें सन् 2001 में ग्रामीण पुरुष साक्षरता दर क्रमशः 57.7, 57.9 तथा 58.1 थी।

**ग्रामीण महिला साक्षरता**

मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश ग्रामीण महिला साक्षरता की दृष्टि से भारत के पिछड़े क्षत्रों में सम्मिलित हैं। सन् 2001 की जनगणना के अनसार मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश में ग्रामीण साक्षरता दर 37.2 रही। जनपदीय स्तर पर ग्रामीण महिला साक्षरता को उपरोक्त सारिणी में अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश के कुल 10 जिलों में से जिलों में ग्रामीण महिला साक्षरता दर 40.1 से कम रही। इन जिलों में सीतापुर (30.6), खीरी (32.2), हरदोई (33.8), उन्नाव (37.9), फतेहपुर (39.5) तथा लखनऊ (40.0) जिले सम्मिलित हैं। सन् 2001 में मध्यवर्ती उत्तर प्रदेश के जिलों में सर्वाधिक ग्रामीण महिला साक्षरता दर रखने वाले जिलों में कानपुर नगर (54.5) तथा कानपुर देहात (53.7) जिले सम्मिलित हैं। उक्त दोनों जिलों में ग्रामीण महिला साक्षरता दर के अधिक रहने का प्रमुख कारण कानपुर महानगरीय सभ्यता का प्रभाव तथा महिला शिक्षण संस्थाओं की सुविधा है।

Scanned with OKEN Scanner

# I-1 निचले सोन बेसिन की ग्रामीण जनसंख्या का प्रादेशिक विश्लेषण : एक विधितंत्रात्मक अध्ययन

डॉ० जय प्रकाश राय
रीडर, भूगोल विभाग, डी.सी.एस.के. महाविद्यालय मऊनाथ भंजन

जनसंख्या के विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण की अनेक विधियां हैं। जनगणना रिपोर्ट में सार्वजनिक सूचना के दृष्टिकोण से विश्लेषण किया जाता है जबकि शोध कार्य शोध के उद्देश्यों के अनुरूप विधि अपनाकर जनसंख्या के आंकड़ों का विश्लेषण होता है। प्रस्तुत प्रपत्र में जनसंख्या विश्लेषण के त्रि-आधारी मानारेख के माध्यम से ग्रामीण जनसंख्या के विश्लेषण के समझाया गया हे त्रिआआर्टी ओरख (Ternary Diagram) क्रियाशील जनसंख्या के प्रादेशिक स्वरूप की ओर अधिक स्पष्ट करने हेतु पेल्टो (1954) महोदय द्वारा प्रयुक्त तिहरा आरेख का प्रयोग किया गया है। इस आरेख का सर्वप्रथम कलार्क महोदय ने 1940 में किया था जिसे संशोधित कर पेल्टों ने प्रस्तुत किया।

प्रयुक्त आरेख मे त्रिभुज की तीनों समान लम्बाई की भुजाओं पर प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्रिया-कलापों के प्रतिशत को अंकित किया गया है। त्रिभुज के मध्य निर्मित षटकोण के अन्तर्गत A,B,C की स्थिति को प्रकट करता है। त्रिभुज के उपरी भाग को A द्वारा आवृत्त क्षेत्र प्राथमिक क्रिया-कलाप तथा त्रिभुज के दक्षिण-पश्चिमी भाग में B द्वारा आवृत्त क्षेत्र तृतीयक क्रिया-कलापों के क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। त्रिभुज की तीनों भुजाओं पर स्थित मध्यवर्ती भाग जो AB, BC तथा AC द्वारा प्रदर्शित है, क्रमशः प्राथमिक द्वितीय , द्वितीयक-तृतीयक एवं प्राथमिक-तृतीयक कार्यों के मिश्रित प्रभाव क्षेत्र को सीमांकित रहता है। इस तरह त्रि-आधारी आरेख के सात खण्ड प्रदर्शित हैं। प्रत्येक अंचल के प्राथमिक, द्वितीयक तृतीयक कार्यों के अनुपात के आधार पर उन्हें त्रिभुज के कटान बिदुंओ पर अंकित किया गया है। ❐



Scanned with OKEN Scanner

# I-2 Latest Concept in Relation to Lactating Mothers & Infant Health

Mrs. Amrita Shahi , Dr. (Mrs.) Shakti Singh &
Mrs. Divya Rani Singh
Department of Home Science
D.D.U. Gorakhpur University, Gorakhpur

The importance of breast-feeding in infant nutrition, health and survival has long been recognized. The recognition that lactation may have profound effects on maternal nutrition and fertility is of more recent origin. It is now well established that over millennia, breast-feeding has been the major determinant of infant growth, health and survival and the contraceptive effect of lactation has been the principal regulator of human fertility.

The present decade is witnessing marked changes in the life-style, nutritional status, morbidity profile, fertility pattern and contraceptives use in Indian women; some of these may directly or indirectly have an impact on breast feeding practices. There is increasing employment of women outside the home and consequent reduction in "demand feeding" and earlier introduction of supplements to the infant. Health education, appropriate contraceptive care and food supplements to lactating women could result in improvement in maternal nutritional status, more rapid return of fertility and faster advent of the next pregnancy if contraceptive care is not provided. With the advent of the HIV epidemic, conflicting advice from different agencies regarding breast feeding in seropositive women has raised some doubts in the minds of both professionals and the general public regarding the continued advocacy for breast feeding in all segments of population.

Adequate Nutrition of the Mother during lactation is also of vital important since during the first few months of life, the infant deriver all her nutrition from the mother's milk generally, the child is breastfed for 6-9 months. As the mother has to nourish a fully developed and rapidly growing infant, she needs extra nutrients to meet the baby needs in addition to her own requirements. Any inadequacies in her diet influence both the quantity and the quality of milk secreted although the effect on quantity is more pronounced. A well nourished mother on an average secretes about 850 ml of milk/day, whereas in care of a severely malnourished mother, the level may go down to as low as 400 ml/day. As for quality, the mother has an excellent ability ability to breast feed her baby successfully ever if the diet is not able to meet her own nutritional needs adequately in such a case, the mother draws on her body reserves to meet the needs of lactation at the cost of her own health. However, dietary deficiencies of water soluble vitamins like ascorbic acid and vitamins of B-group, lead to lower levels of there vitamins in breast milk. The protein, carbohydrate and calcium content in mother's milk is not altered ever when the mother is malnourished.



Scanned with OKEN Scanner

I-2

# बच्चों में कुपोषण कारण तथा निवारण

डा० (श्रीमती) शक्ति सिंह एवं
श्रीमती नीलम वैश्य
गृह विज्ञान विभाग, दी०द०उ० गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

आज का बच्चा कल देश का भविष्य होता है। अतः स्वस्थ्य नागरिक पैदा करना देश तथा समाज के प्रति हम सभी का मूल कर्तव्य बनता है। जिसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि माँ के गर्भ से ही शिशु को किसी भी प्रकार से पोषक तत्वों की कमी नहीं होने पाये अर्थात गर्भावस्था में माँ द्वारा लिया गया पूर्णकालिक तथा संतुलित आहार के द्वारा ही शिशु का भावी जीवन आधारित होता है। किन्तु गर्भावस्था के दौरान यदि माता को पूर्ण पौष्टिक अर्थात् गुणात्मक तथा भारात्मक रूप से अपर्याप्त आहार गर्भस्थ शिशु को भी विभिन्न प्रकार के पोषक तत्वों की कमी जैसे कुपोषण, एनीमिया आदि का शिकार होना पड़ता है, और अत्याभाव की दशा में गर्भावस्था के दौरान माता तथा शिशु की मृत्यु भी हो सकती है, साथ ही जिस तरह शिशु के जन्म के बाद माँ के द्वारा ६ माह तक स्तनपान अति आवश्यक होता है उसी प्रकार ६ माह बाद शिशु को माँ के दूध की मात्रा कम करते हुए उसे अन्य पूरक आहार न देने अर्थात् केवल माँ के दूध पर ही निर्भर रहने से शिशुओं के वृद्धि तथा विकास के लिए सभी पोषक तत्वों जैसे कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन्स, मिनरल्स, वसा आदि उपयुक्त मात्रा में नही मिल पाते अतः ऐसी दशा में उनके शरीर में हो रही पोषक तत्वों कमी धीरे-धीरे भयंकर परिणाम के रूप में सामने आते हैं अर्थात छोटे बच्चों (०-६ वर्षो) में जब आहार मे से विशेषकर प्रोटीन ऊर्जा कुपोषण अर्थात् PEM के रूप में दिखाई देता है। प्रोटीन, ऊर्जा, कुपोषण बच्चों के साथ-साथ किशोरों, वयस्कों तथा स्तनपान कराने वाली स्त्रियों में भी देखा जाता है। प्रोटीन, ऊर्जा, कुपोषण के कारण विशेषकर बच्चों के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है तथा इससे मृत्यु तक हो सकती है।

अधिकांश भारतीयों के भोजन में चाहे वह गरीब हो या अमीर, वृद्ध हो या युवा, स्त्री हो या पुरुष, गर्भवती हो या धात्री, किसी न किसी पौष्टिक तत्वों की अधिकता या कमी रहती ही है। विशेषकर गरीब किसान, मजदूर तथा निम्न आर्थिक वर्ग के लोगो का भोजन गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों दृष्टि से अपर्याप्त होता है। भारत की अधिकांश गरीब जनता को प्रतिदिन सुबह शाम भरपेट दाल-रोटी भी नसीब नहीं होती है अतः वे प्रोटीन-कैलोरी कुपोषण या कुपोषण के शिकार हो जाते है भरपेट अनाज न मिल पाने से वे निर्बल, कमजोर, निशक्त एवं थके-थके दिखाई देते हैं।

"कुपोषण पोषण की वह स्थिति है जिसके कारण व्यक्ति के स्वास्थ्य में गिरावट आने लगती है, यह एक या एक से अधिक पोषक तत्वों की कमी या अधिकता या असंतुलन के कारण होती है जिसके कारण शरीर रोग ग्रस्त हो जाता है। ०–5 वर्ष के बच्चों में इसके गम्भीर परिणाम ज्यादा दिखाई पड़ते हैं।

❐



Scanned with OKEN Scanner

II-1

# खाद्यान्नों में घुलता जहर : जैव कृषि

सुभाष कुमार
प्रयोगशाला सहायक, भूगोल विभाग, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, गोरखपुर

धरातल पर समस्त जीवधारियों को जीवन्त रहने के लिए उदरपूर्ति आवश्यक है। प्रधानतः मानव समाज ने जब से सभ्यता तथा संस्कृति की विकास यात्रा प्रारम्भ की तभी से भोज्य तथा पेय पदार्थों की आपूर्ति तथा उपलब्धता प्रकृति भी विभिन्न कालावधियों में परिवर्तित होती जा रही है। विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्र में हुई व्यापक प्रगति ने भी इस क्षेत्र में अपना ठोस प्रभाव जमाया। नवीनतम कृषि प्रौद्योगिकी ने भी कृषि उत्पादन के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की ।

तीव्रगति से प्रौद्योगिकी विकास ने हमारी सामान्य जीवन शैली को इतना अत्याधुनिक बना दिया है कि हमारा सामान्य स्वास्थ्य सुधरने की अपेक्षा बिगड़ने लगा है। इस तथ्य का महत्वपूर्ण उदाहरण 'हरित क्रांति' है जिसके मुख्य आधार हैं। उन्नत तथा संकट बीज, कीट नाशक रसायन, सिंचाई की नई तकनीक तथा आधुनिकतम कृषि प्रबन्ध इत्यादि। परन्तु अब उसके प्रतिकूल प्रभाव भी सामने आ रहे हैं। विश्व खाद्य संगठन तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक आकलन के अनुसार भारत सहित अधिकतर विकासशील देशों 90 प्रतिशत जन-साधारण प्रतिदिन विषाक्त खाद्य पदार्थों का सेवन करने के लिए मजबूर हैं। इस तरह के खाद्य सामग्रियों में अन्न, दाल, दूध, फल तथा सब्जियाँ आदि प्रमुख हैं और इन पदार्थों का सेवन करना भी उनकी मजबूरी बन जाती है। इस तरह से विषाक्त खाद्य पदार्थों का आहार लेने से सिरदर्द, उच्च रक्तचाप, जी घबराना, सफेद दाग, पाचन तंत्र की खराबी, अम्ल, पथरी, प्रजनन क्षमता में कमी तथा कैंसर जैसे प्राणघातक रोगों के होने की आशंका हो जाती है।

वास्तव में कृषि सम्बन्धित विभिन्न क्रियाओं के दौरान ही खाद्य पदार्थों में विषाक्त तत्वों का प्रवेश होता है अतः कृषि विज्ञान के अनुसार विषैले खाद्य पदार्थों को दो भागों में बाँटा जा सकता है। पहला है सम्पर्क विष (कॉन्टैक्ट पॉइजन) जो पौधों पर छिड़काव के दौरान कीटों तथा किसानों को प्रभावित करता है। दूसरा है- व्यवस्थित विष (सिस्टमोटिक पॉइजन) जिसके छिड़काव के पहले ही पौधा बन जाता है और बाद में कीट उस पौधे के सम्पर्क में आने से पहले ही मर जाता है। इस तरह इन पौधों से उत्पन्न अनाज विषाक्त होते हैं।

यहाँ तक कि फसल काटने के बाद भी भंडारण के लिए रासायनिक कीटनाशकों (जैसे एल्मूनियम फास्फाइड) का भरपूर उपयोग किया जाता है । यदि बिना धोए इस प्रकार के अनाज को पिसवा लिया जाए या सीधे तौर पर उपयोग किया तो इसके सेवन करने वालों को सिर-दर्द, उल्टी, चक्कर, पेट की गड़बड़ी आदि की शिकायत हो जाती है।

इस तरह से स्पष्ट होता है कि कृषि पद्धति में मूलभूत या आमूल परिवर्तन करना अत्यावश्यक है वरना कीटनाशकों के उपयोग को कम करना उस पर रोक लगाना संभव नहीं है।

प्रस्तुत शोध-प्रपत्र में खाद्यान्त पदार्थों में घुलते जहर, मानव स्वास्थ्य पर उनके घातक प्रभाव एवं कृषि पद्धति के स्वरूप को परिवर्तित कर रोक के सुझाव दिये गये हैं।



Scanned with OKEN Scanner

# II-3 ग्रामीण भारत में शाश्वत ऊर्जा के प्रतिरूप एवं सम्भावनाएँ

डॉ. विजय कुमार चौधरी, प्रवक्ता, भूगोल
डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, गोरखपुर

भारत एक विकासोन्मुख देश है। विकास की निरन्तरता में ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका है। पेट्रोलियम संसाधनों की ऊँची दरें तथा कोयले की क्षीणता ने भारतीय जन मानस को उद्वेलित किया है कि यदि विकास के पहिये को गतिमान रखना है तो ऊर्जा के लिए विकल्पों पर अधिक ध्यान देना होगा। वर्तमान समय में भारत के ग्रामीण अंचल गंभीर ऊर्जा संकट के दौर से गुजर रहे हैं। इन क्षेत्रों में बिजली संकट को शाश्वत ऊर्जा (अक्षय ऊर्जा) का भरपूर विकास करके दूर किया जा सकता है। क्योंकि, सम्पूर्ण देश में इसी क्षेत्र में प्रतिवर्ष एक लाख मेगावाट तक बिजली उत्पादित की जा सकती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में 350 लाख उन्नत चूल्हों और 3.71 लाख परिवार-बायो गैस संयंत्र को स्थापना कर खाना पकाने की ऊर्जा की दिशा में एक बड़ी सफलता अर्जित की गई है। इस क्षेत्र में भारत पूरे विश्व में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। बायोगैस संयंत्र और उन्नत चूल्हों के प्रयोग प्रति वर्ष 1.6 करोड़ टन ईधन की लकड़ी का बचत किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष 9.4 मीट्रिक टन यूरिया के बराबर जैविक उर्वरक का उत्पादन किया जा रहा है। जिससे अधिक व्ययशील रसायनिक उर्वरकों की खपत कम हो गयी है साथ ही पर्यावरण की हानि में भी कमी आयी है। इसी तरह पवन ऊर्जा से 45 हजार मेगावाट, सौर ताप ऊर्जा से 5 लाख करोड़ मेगावाट बिजली क्षमता प्रतिवर्ष उपलब्ध है। और बायोमास तथ बगास से 17500 मेगावाट, लघुपन बिजली क्षेत्र से 15000 मेगावाट, शहरी कचरे से 1700 मेगावाट बिजली उत्पादन की क्षमता का आंकलन किया गया है।

अक्षय ऊर्जा मंत्रालय ने भविष्य में 20 लाख बायोगैस संयंत्र 14 करोड़ वर्गमीटर पानी गर्म करने के सामूहिक क्षेत्र का विकास तथा 12 करोड़ उन्नत चूल्हों की स्थापना का कार्यक्रम बनाया है।

11 वीं पंचवर्षीय योजना के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत मंत्रालय इस दिशा में अभी से गंभीर है। जिन ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली अभी नहीं पहुँच पायी है 2012 तक उन आंचलों में 30 लाख गोबर गैस सयंत्र, 50 लाख सौर लाइट, 20 लाख सौर स्ट्रीट लाइट, दूर-दराज के गाँवों में पानी गर्म करने की



Scanned with OKEN Scanner

सुविधाएँ देने व 18 हजार गाँवों की स्थाई अक्षय ऊर्जा स्रोतों के विकास की योजना बनाई जा रही है। मंत्रालय की योजना इन स्रोतों में विकास करके 10 हजार मेगावाट बिजली प्रति वर्ष पैदा करने की है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों के संग्रहण के पश्चात् सारणीयन एवं विश्लेषण करके तथ्यों को स्पष्ट किया गया है।

भारत शाश्वत ऊर्जा के उत्पादन तथा विकास में एक अग्रणी देश बनता जा रहा है। यदि पिछले दो दशकों में जितनी वृद्धि इस क्षेत्र में हुई वह जारी रही तो निकट भविष्य में ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की उपलब्धता सुचार रूप से होने लगेगी। उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत-पत्र में विशद् विचार करते हुए भविष्य को सम्भावनाओं को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

❐

Scanned with OKEN Scanner

# III-1 सूचना विस्फोट एवं ग्रामीण जीवन पद्धति

डॉ० प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय गोरखपुर
डॉ० विजय कुमार चौधरी
प्रवक्ता, भूगोल, महाराणा प्रताप महाविद्यालय गोरखपुर

संचार एवं समाज का अटूट सबन्ध है। संचार और समाज एक दूसरे से उसी प्रकार सम्बन्धित है जैसे एक बीज का वृक्ष से सम्बन्ध। कुछ मुर्धन्य विद्वान बीज की उत्पत्ति पहले मानते हैं कुछ वृक्ष की/दोनों में जो भी पहले उत्पन्न हुआ हो लेकिन उनका अन्योनाश्रित सम्बन्ध विद्मान है। शिशु के जन्म की प्रथम सूचना रोने के माध्यम से संसार ही समाज को देता है और इसी तरह अंतिम साँस का संकेत भी संचार माध्यमों से प्राप्त होता है। इस प्रकार यह निर्विवाद सिद्ध है कि संचार और समाज एक ही सिक्के के दो-पहलू जैसे हैं। ध्यात्वय है कि पाषाण युग से परमाणु युग तक की यात्रा मानव समाज ने संचार के कंधों पर बैठकर ही तय किया है। अर्थात कबूतर से कम्प्यूटर तक की मानव सभ्यता की उड़ान संचार के पंखों से ही पूरी हुई है। इसलिए संचार और समाज, चाहे वह ग्रामीण समाज हो या नगरीय का अटूट सम्बन्ध स्वीकार किया जाता है।

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के सम्प्रेषण की अपनी अलग पहचान है क्योंकि इस पर स्थानीय ग्रामीण परिवेश की स्पष्ट छाप दिखायी पड़ती है। स्थानीय ग्रामीण संप्रेक्षय माध्यम जैसे लोक गीत, लोक नृत्य, राम लीला आदि ग्रामीण क्षेत्रों के जन संचार के महत्वपूर्ण साधन है। संचार सुविधाओं के मामले में वर्तमान समय में लगभग 35 प्रतिशत गाँव सड़कों से जुड़े हुए नहीं है टेलीफोन की सुविधा भी बहुत से गाँवों में नहीं पहुँच पायी। यातायात जैसी भौतिक संचार की सुविधायें भी गाँवों में सरलता से उपलब्ध नहीं हैं। भारत के विकसित राज्यों में गाँवों की स्थिति अपेक्षा कुछ अच्छी है लेकिन अन्य राज्यों के गाँवों में स्थिति अच्छी नहीं है यहाँ तक कि बहुत सारे गाँव देश की मुख्यधारा से कटकर अपने ही परिवेश में जी रहे हैं।

सर्वप्रथम पहल आल इंडिया रेडियो ने किया ग्रामीण श्रोताओं तक प्रसारण पहुँचाने के 1940 के दशक में सामुदायिक रेडियो से ग्रामीण क्षेत्रों में वितरित किया गया। सामुदायिक रेडियो सेटों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के लोग ग्रामीण क्षेत्र के बाहर की अनेकानेक गतिविधियों तथा महत्वपूर्ण कृषि सम्बन्धी जानकारी से अवगत होने लगे जो कालान्तर में 'हरित क्रांति' को सफल बनाने में विशेष भूमिका की निर्वहन किया। ग्रामीण क्षेत्रों में नब्बे के दशक से पहले महत्वपूर्ण एवं नवीनतम जानकारियों , मनोरंजन के साधन के साथ ही साथ रेडियों कृषि सम्बन्धी नवीन ज्ञान के संप्रेक्षण के महत्वपूर्ण साधन रहे।

1975 में 'साइट (सेटेलाइट इन्स्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट) जैसी महत्वपूर्ण परियोजना के माध्यम से देश के छः राज्यों के 2400 गाँवों को सामुदायिक टेलीविजन सेट उपलब्ध कराये गये जो सीधे उपग्रह प्रणाली से जुड़े थे। वर्ष 2005–06 के आम बजट में 'ग्राम ज्ञान केन्द्र' स्थापित करने की घोषणा की गई है। इन सूचना केन्द्रों में आधुनिकतम सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए गाँव वालों की सूचना, शिक्षा और संचार की आवश्यकताओं को पूरा किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में भारत के ग्रामीण परिवेश में सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव का सकरात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलुओं को रेखांकित रहते हुए समीक्षा प्रस्तुत किया जायेगा।



Scanned with OKEN Scanner

## राष्ट्रीय संगोष्ठी ( 7-9 जनवरी, 2006 ) :

'ग्रामीण भारत का भविष्य' विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन कर महाविद्यालय ने अपने प्रथम सत्र में ही अकादमिक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रसिद्ध विचारक एवं राजनैतिक चिन्तक माननीय के. एन. गोविन्दाचार्य ने तथा विषय प्रवर्तन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं जाकिर हुसैन चेयर, मैसूर विश्वविद्यालय के निदेशक प्रो. आर. पी. मिश्र ने किया। अध्यक्षता पुरातत्ववेत्ता प्रो. शिवाजी सिंह ने किया। समापन अवसर पर प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. भरत झुनझुनवाला मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित रहे। संगोष्ठी में 12 प्रान्तों के 169 प्रतिनिधियों सहित कुल 300 प्रतिभागियों ने अपने शोधपत्रों का प्रस्तुतिकरण किया।

**संवाद पत्रिका का विमोचन-** सत्र 2006 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी पर आधारित पत्रिका 'संवाद' का विमोचन नाटमो के निदेशक डा. पृथ्वीश नाग ने किया। इस अवसर पर 'ग्रामीण भारत का भविष्य ' विषय पर उनका शोधपूर्ण व्याख्यान हुआ।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते के.एन. गोविन्दाचार्य एवं अन्य अतिथि

राष्ट्रीय संगोष्ठी के तकनीकी सत्र को सम्बोधित करते भरत झुनझुनवाला

महाविद्यालय में व्याख्यान देते डॉ. पी. नाग एवं मंचासीन अतिथि